

भाग - ख

सड़क सुरक्षा



PART - B

About Road Safety



ड्राइविंग लाइसेंस कैसे प्राप्त करें?

किसी भी सार्वजनिक स्थान पर मोटर वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग लाइसेंस अति आवश्यक और अनिवार्य दस्तावेज है। ड्राइविंग लाइसेंस स्थानीय परिवहन प्राधिकरण द्वारा जारी किया जाता है। ड्राइवर के पास उसके नाम पर वाहन की उस विशेष वाहन श्रेणी का संबंधित लाइसेंस होना जरूरी है, जिसे वह चला रहा है, तभी उसे प्राधिकृत ड्राइवर माना जाएगा।

वाहन और सारथी: सड़क एवं परिवहन के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास तथा संपूर्ण देश में समरूपता और अंतर-प्रचालनिकता को सुनिश्चित करने के लिए, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने स्मार्ट कार्ड आधारित ड्राइविंग लाइसेंस तथा पंजीकरण प्रमाणपत्र जारी करने के लिए केन्द्रीय मोटर वाहन नियम, 1989 में प्रावधान किये हैं। मंत्रालय ने एक मानकीकृत सॉफ्टवेयर (पंजीकरण प्रमाणपत्रों के लिए “वाहन” तथा ड्राइविंग लाइसेंसों के लिए “सारथी”) विकसित किया है और यह सॉफ्टवेयर सभी राज्यों को उपलब्ध कराया गया है। सॉफ्टवेयर में आरटीओ का स्वचालन तथा कम्प्यूटरीकरण दोनों शामिल हैं ताकि दस्तावेजों को जारी करना संभव हो सके, जैसे स्मार्ट कार्ड के रूप में ड्राइविंग लाइसेंस तथा पंजीकरण प्रमाणपत्र। आंकड़ों को सुगमता से उपलब्ध कराने के लिए सभी आरटीओ को इसके साथ जोड़ा गया है। मंत्रालय ने इन सॉफ्टवेयर माध्यमों का प्रयोग करते हुए अभियान पद्धति परियोजना (मिशन मोड प्रोजेक्ट) के रूप में ड्राइविंग लाइसेंस तथा पंजीकरण प्रमाणपत्रों के लिए राज्य तथा राष्ट्रीय रजिस्टर के निर्माण की परियोजना भी आरंभ की है।

मोटे तौर पर दो प्रकार के ड्राइविंग लाइसेंस होते हैं :

प्रशिक्षु लाइसेंस (सीखने वाले का लाइसेंस)

यह एक अस्थायी लाइसेंस है जो 6 महीने तक के लिए वैध होता है।

How to obtain Driving License?

Driving License is the most essential and mandatory document to drive a motor vehicle in any public place. Driving License is issued by the Local Transport authority. The driver must possess, in his name, the relevant driving license of that particular vehicle category, which he/she is driving.

VAHAN & SARATHI: In order to introduce Information Technology in the Road Transport Sector and to ensure uniformity and interoperability throughout the country, the Ministry of Road Transport & Highways has made provisions in the Central Motor Vehicles Rules, 1989 for issuance of Smart Card based Driving License and Registration Certificates. The Ministry developed standardized software (VAHAN for Registration Certificates and SARATHI for Driving Licenses) and made it available to all the States. The software covers both back-end automation of R.T.Os and front-end computerisation to enable issuance of documents, such as Driving License and Registration Certificates in a Smart Card mode. All the RTOs have also been linked for easy access of data. Ministry has also taken up a project of creation of State and National Register of Driving License and Registration Certificates using these software platforms.

Broadly there are two types of Driving Licenses

Learner License

This is a temporary license valid upto 6 months only. It is issued to learn driving of Motor Vehicles subject to certain conditions.



इसे कतिपय शतों के मद्देनजर मोटर वाहन चलाना सीखने के लिए जारी किया जाता है।

स्थायी लाइसेंस

स्थायी लाइसेंस अंतिम दस्तावेजी, जो आपको वैध ड्राइविंग के लिए प्राधिकृत करता है। प्रशिक्षु लाइसेंस जारी होने की तारीख से एक महीना पूरा होने पर स्थायी लाइसेंस के लिए आवेदन किया जा सकता है।

पात्रता

ड्राइविंग लाइसेंस के आवेदक की उम्र आवेदन की तारीख के दिन 18 वर्ष होनी चाहिए (वाणिज्यिक वाहनों के लिए आवेदक की उम्र 20 वर्ष होनी चाहिए और 50 सीसी तक के इंजन क्षमता वाले वाहनों के लिए आवेदक की उम्र 16 वर्ष होनी चाहिए और साथ ही उसके अभिभावक/संरक्षक की सहमति होनी चाहिए)।

आवेदक को पूर्णतः यातायात नियमों और विनियमों से परिचित होना चाहिए।

प्रशिक्षु का लाइसेंस कैसे प्राप्त करें?

प्रशिक्षु लाइसेंस का आवेदन करने के लिए निम्नलिखित दस्तावेज आवश्यक होते हैं :

1. आवेदन फॉर्म (स्थानीय परिवहन प्राधिकरण में उपलब्ध)
2. निवास प्रमाण पत्र
3. आयु प्रमाण पत्र
4. आवेदक के नवीनतम ३ पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ
5. फॉर्म नं.-1 ए में चिकित्सा प्रमाणपत्र
6. फॉर्म नं.-1 में चिकित्सा फिटनेस की स्वघोषणा
7. प्राधिकरणों द्वारा तय की गई अपेक्षित फीस।

दस्तावेजों के सत्यापन के बाद आवेदक की वर्णान्धता की जांच की

Permanent License

Permanent License is the final documentary authorization for valid driving. One becomes eligible for permanent license after expiry of one month from the date of issuing of the learner license.

Eligibility

The applicant for driving license should be 18 years old on the date of application (For commercial vehicle the applicant must be 20 years old and for vehicles upto 50 CC engine capacity applicant must be 16 years and must have the consent of parents/guardian).

The applicant should be fully conversant with Traffic rules and regulations.

How to acquire Learner License?

The following documents are required while applying for a Learner's Driving License

1. Application Form
(available from Local Transport Authority)
 2. Residence Proof
 3. Age Proof
 4. 3 recent passport size photographs of the applicant.
 5. Medical certificate in Form No. 1A
(wherever applicable)
 6. Self declaration of Medical fitness in Form No. 1
 7. Requisite fee as laid down by the authorities.
- After verification of documents the applicant is inspected for color blindness. After this a 20 minute learner test is conducted with 20 multiple choice objective type questions.



जाती है। इसके बाद, 20 बहु-विकल्पीय वस्तुनिष्ठ सवालों के साथ 20 मिनट का एक टेस्ट आयोजित किया जाता है। इस टेस्ट में पास होने वाले आवेदक को प्रशिक्षु लाइसेंस (लर्नर लाइसेंस) जारी कर दिया जाता है। प्राधिकरण एक पुस्तिका भी देता है ताकि प्रशिक्षु लाइसेंस के लिए टेस्ट देने से पहले आवेदक उसे पढ़ सके।

स्थायी लाइसेंस प्राप्त करना

स्थायी लाइसेंस पाने के लिए :

1. आवेदक के पास एक वैध लर्नर लाइसेंस होना चाहिए।
2. लर्नर लाइसेंस जारी होने की तारीख से 30 दिन के बाद और 180 दिनों के भीतर स्थायी लाइसेंस के लिए आवेदन किया जाना चाहिए।
3. आवेदक को ड्राइविंग, यातायात के नियमों, विनियमन और वाहन प्रणाली के बारे में सुपरिचित होना चाहिए।

आवश्यक दस्तावेज :

1. वैध मूल प्रशिक्षु लाइसेंस (लर्नर लाइसेंस)
2. फार्म नं. 4 में आवेदन
3. अपेक्षित फीस
4. उम्र और निवास का प्रमाण पत्र
5. एक नवीनतम पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ
6. वाणिज्यिक लाइसेंस के मामले में फार्म नं. 5
7. वाहन की श्रेणी, जिसके लिए आप लाइसेंस चाहते हैं।

दस्तावेजों की जांच के बाद आवेदक का ड्राइविंग टेस्ट लिया जाता है। इसमें ड्राइविंग निपुणताओं, वाहन से परिचित होने, यातायात नियमों एवं विनियमों के बारे में जानकारी को लेकर आवेदक की परीक्षा ली जाती है। यदि आवेदक ड्राइविंग परीक्षा पास कर लेता है तो उसे स्थायी लाइसेंस दिया जाता है। यदि आवेदक असफल रहता है तो वह 7 दिन बाद ड्राइविंग टेस्ट में पुनः भाग ले सकता है।

Learner License is issued to the applicant who qualifies the test. The authorities also provide a handbook so that applicants may go through it before writing test for Learner License. The learner license is issued on the same date after completion of all tests.

Acquiring Permanent License.

To acquire Permanent License:

1. The applicant should have a valid learner license.
2. One should apply for Permanent License after 30 days and within 180 days from the date of issuance of learner license
3. The applicant should be well versed with the driving, traffic rules, regulation and the system of vehicle.

Documents required

1. Valid original learner's license
2. Application in Form No.4
3. Requisite fee
4. Proof of age and residence
5. One recent passport size photograph
6. Form No.5 in case of commercial license
7. The vehicle of that category which you are seeking license for.

After scrutiny of all the documents the applicant is put through a driving test. The applicant is tested for his driving skills, familiarization with the vehicle, knowledge of traffic rules and regulations. If the applicant passes the driving test he/she is awarded Permanent Driving License. In case applicant fails, he/she can reappear for the driving test after 7 days.



सड़क दुर्घटनाओं के सामान्य कारण

भारत में सड़क दुर्घटना का परिदृश्य

| वर्ष | सड़क दुर्घटनाओं की कुल संख्या | दुर्घटना में मृत व्यक्तियों की संख्या | दुर्घटना के कारण घायल व्यक्तियों की संख्या |
|------|-------------------------------|---------------------------------------|--|
| 2005 | 439255 | 94968 | 465282 |
| 2006 | 460920 | 105749 | 496481 |
| 2007 | 479216 | 114444 | 513340 |
| 2008 | 484704 | 119860 | 523193 |
| 2009 | 486384 | 125660 | 515458 |
| 2010 | 499628 | 134513 | 527512 |
| 2011 | 497686 | 142485 | 511394 |

भारत में वर्ष 2011 के दौरान लगभग 4.9 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुई थीं, जिनके कारण 1,42,485 लोगों की मृत्यु हुई और 5 लाख से अधिक लोग घायल हुए। यह संख्या दर्शाती है कि भारत में प्रत्येक मिनट पर एक सड़क दुर्घटना होती है और प्रत्येक 4 मिनट पर सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मृत्यु होती है।

सड़क का कोई भी प्रयोगकर्ता नहीं चाहता कि उसके साथ कभी भी कोई सड़क दुर्घटना हो, फिर भी कई बार दुर्घटनाएं हो जाती हैं। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि हम सड़क पर अपनी गलतियों से सबक नहीं सीखते। अधिकतर सड़क प्रयोगकर्ता सड़क के इस्तेमाल के बारे में सामान्य नियमों और सुरक्षा उपायों के बारे में अच्छी तरह परिचित होते हैं, लेकिन प्रयोगकर्ताओं की असावधानी के कारण दुर्घटनाएं एवं टक्कर होती हैं। इन दुर्घटनाओं और टक्कर का प्रमुख कारण मानवीय भूलें हैं। हम मनुष्यों के कुछ सामान्य आचरणों के बारे में प्रकाश डाल रहे हैं, जिनसे दुर्घटनाएं होती हैं। ये हैं :

1. बहुत तेज गति से वाहन चलाना

Common Causes of Road Accidents

Road Accident Scenario in India

| Year | Total No. of Road Accidents | Total No. of Persons Killed | Total No. of Persons injured |
|------|-----------------------------|-----------------------------|------------------------------|
| 2005 | 439255 | 94968 | 465282 |
| 2006 | 460920 | 105749 | 496481 |
| 2007 | 479216 | 114444 | 513340 |
| 2008 | 484704 | 119860 | 523193 |
| 2009 | 486384 | 125660 | 515458 |
| 2010 | 499628 | 134513 | 527512 |
| 2011 | 497686 | 142485 | 511394 |

During the year 2011, there were around 4.9 lakh road accidents which resulted in deaths of 1,42,485 people and injured more than 5 lakh persons in India. These numbers translate into one road accident every minute and one road accident death every four minutes, for India.

Road accident is most unwanted thing to happen to a road user, though they happen quite often. The most unfortunate thing is that we don't learn from our mistakes on road. Most of the road users are quite well aware of the general rules and safety measures while using roads but it is only the laxity on part of road users which cause accidents and crashes. Main cause of accidents and crashes are human errors. We are elaborating some of the common behaviour of drivers which result in accident:

1. Over Speeding
2. Drunken Driving



2. नशे में गाड़ी चलाना
3. ड्राइवर का ध्यान बंटाने वाली चीजें
4. लाल बत्ती को लांघना
5. सीट बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा
6. लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग।

बहुत तेज गति से वाहन चलाना : सभी को पीछे छोड़ देना एक मानव प्रवृत्ति है किन्तु अधिकतर घातक दुर्घटनाएं बहुत तेज गति के कारण होती हैं। गति में तीव्रता से वृद्धि, दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गंभीरता बढ़ाती है। कम गति से चलने वाले वाहनों की तुलना में तेज गति के वाहनों की दुर्घटना की संभावना अधिक रहती है और तेज गति के वाहनों के मामले में दुर्घटना की गंभीरता भी अत्याधिक होगी। गति जितनी अधिक होगी, उतना ही अधिक जोखिम होगा। बहुत तेज गति की स्थिति में वाहन रोकने के लिए अधिक दूरी यानी 'ब्रेकिंग डिस्टेंस' की जरूरत पड़ती है। कम गति वाले वाहन कम दूरी पर ही रुक जाते हैं, जबकि तेज गति वाले वाहन लंबी दूरी के बाद ही रोके जा सकते हैं और फिसलते भी हैं। तेज गति से चलने वाले वाहन की टक्कर के दौरान गहरा प्रभाव होगा, इसलिए अधिक चोट लगेगी। तेज गति से गाड़ी चलाने पर आगामी घटना के बारे में फैसला लेने की क्षमता कम हो जाती है, जिसके चलते फैसले में भूल होती है और अंततः टक्कर हो सकती है।

नशे में गाड़ी चलाना : खुशी का कोई मौका मनाने के लिए शराब का सेवन आम बात हो गई है। लेकिन, जब ड्राइविंग के साथ इसे मिलाया जाए तो यह खुशी बदकिस्मती में बदल सकती है। शराब के सेवन से ध्यान केन्द्रित करने में कमी आती है। इससे मानव शरीर

3. Distractions to Driver
4. Red Light jumping
5. Avoiding Safety Gears like Seat belts and Helmets
6. Non-adherence to lane driving and overtaking in a wrong manner

Over Speeding: The urge to leave all others behind is human but most of the fatal accidents occur due to over speeding. Increase in speed exponentially multiplies the risk of accident and severity of injury during accident. Faster vehicles are more prone to accident than the slower one and the severity of accident will also be much more in case of faster vehicles. Higher the speed, greater the risk. At high speed the vehicle needs greater distance to stop i.e. braking distance. A slower vehicle comes to halt in a shorter distance while faster one takes long way to stop and is also prone to skidding. A vehicle moving at high speed will have greater impact during the crash and hence will cause more injuries. The ability to judge the situation also gets reduced while driving at faster speed which causes error in judgement and finally a crash.

Drunken Driving: Consumption of alcohol to celebrate any occasion is common. But when mixed with driving it can turn celebration into a misfortune. Alcohol reduces concentration. It decreases reaction time of a human body. Limbs take more time to react to the instructions of brain. It hampers vision due to dizziness. Alcohol dampens fear and incites humans to



तत्काल प्रतिक्रिया नहीं कर पाता। मस्तिष्क के निर्देश पर अमल में शारीरिक अंग अधिक समय लेते हैं। सिर चकराने से यह दृष्टि को कमजोर बनाता है। शराब डर कम करती है और जोखिम लेने को उकसाती है। इन सभी वजहों से दुर्घटनाएं होती हैं और कई बार ये घातक साबित होती हैं। रक्त अल्कोहल संकेन्द्रण (ब्लड अल्कोहल कन्सेन्ट्रेशन) में 0.05% (बी ए सी) की प्रत्येक वृद्धि से दुर्घटना का जोखिम दुगुना हो जाता है। अल्कोहल के अलावा, कई नशीले पदार्थ एवं औषधियां ड्राइविंग संबंधी निपुणताओं और ध्यान केंद्रित करने पर प्रतिकूल असर डालती हैं। सर्वप्रथम, हम यही सलाह देंगे कि अल्कोहल का सेवन न करें। फिर भी, यदि आप अल्कोहल के बिना खुशी मनाना अधूरा महसूस करते हैं तो उसका सेवन करने पर वाहन न चलाएं। शराब न पीने वाले किसी मित्र से आप उसे अपने घर छोड़ने को कहें।

ड्राइवर का ध्यान बंटाने वाली चीजें : गाड़ी चलाते समय थोड़ा सा भी ध्यान बंटने से बड़ी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। ध्यान बंटाने वाले कारण वाहन के बाहर या भीतर हो सकती हैं। आजकल ध्यान बंटाने वाली एक चीज वाहन चलाते समय मोबाइल फोन पर बातचीत करना है। फोन पर बातचीत मस्तिष्क का एक बड़ा हिस्सा घेरती है और एक छोटा हिस्सा ड्राइविंग निपुणता में कार्यशील होता है। मस्तिष्क का यह विभाजन प्रतिक्रिया समय और फैसले की क्षमता में बाधा पहुंचाता है और कभी भी टक्कर का कारण न बनें होता है। ड्राइविंग के दौरान टेलीफोन न करें और न ही सुनें। यदि टेलीफोन अत्यावश्यक हो तो सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर बातचीत करें।

सड़क पर ध्यान हटाने वाली कुछ अन्य बातें इस प्रकार हैं :

- ड्राइविंग करते समय शीशे समायोजित करना।
- वाहन में स्टीरियो/रेडियो को चलाना

take risks. All these factors cause accidents and many a times it proves fatal. For every increase of 0.05% (BAC) blood alcohol concentration, the risk of accident doubles. Apart from alcohol many drugs, medicines also affect the skills and concentration necessary for driving. First of all, we recommend not to consume alcohol. But if you feel your merrymaking is not complete without it, do not drive under the influence of alcohol. Ask a teelotaller friend or a taxi to drop you home.

Distraction to Driver: A minor distraction while driving can cause major accidents. The cause of distraction could be outside or inside the vehicle. The major distraction now a days is talking on mobile phone while driving. The act of talking on phone occupies major portion of brain and the smaller part handles the driving skills. This division of brain hampers reaction time and ability of judgement and becomes one of the reasons of crashes. One should never attend to telephone calls while driving. If the call is urgent one should pull out beside the road and attend the call.

Some of the other distractions on road are:

- Adjusting mirrors while driving
- Adjusting Stereo/Radio in vehicle
- Animals on the road
- Banners and billboards.

The driver should not get distracted due to these



- सड़क पर जानवर
- विज्ञापन और सूचना पट्टा।

इन चीजों से ड्राइवर को अपना ध्यान भंग नहीं करना चाहिए और मार्ग परिवर्तन (डायवर्जन) एवं ध्यान बंटाने वाली बाहरी चीजों के दौरान सुरक्षित रहने के लिए गति धीमी रखनी चाहिए।

लाल बत्ती को लांधना : सड़क चौराहों (इंटरसेक्शंस) पर यह नज़ारा आम बात है कि लाल बत्ती की परवाह किए बगैर वाहन उन्हें पार करते हैं। लाल बत्ती लांधने के पीछे मुख्य मकसद समय बचाना होता है। कई लोग सोचते हैं कि लाल बत्ती पर रुकना समय और ईंधन की बर्बादी है। अध्ययन दर्शाते हैं कि यातायात संकेतों का पालन करने पर ड्राइवरों के समय की बचत होती है और यात्री सुरक्षित एवं समय से गंतव्य पर पहुंचते हैं। लाल बत्ती लांधने वाला व्यक्ति न सिर्फ अपना स्वयं का जीवन जोखिम में डालता है, बल्कि सड़क के अन्य प्रयोगकर्ताओं की सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा करता है। एक ड्राइवर की यह प्रवृत्ति दूसरे ड्राइवर को भी लाल बत्ती लांधने के लिए उकसाती है और अंततः क्रॉसिंग पर अराजकता पैदा होती है। चौराहे (इंटरसेक्शन) पर यह अराजकता यातायात जाम का प्रमुख कारण है। अंततोगत्वा प्रत्येक व्यक्ति अपने गंतव्य स्थान पर देर से पहुंचता है। यह भी देखा गया है कि लाल बत्ती लांधने वाला तेज गति से चौराहा (इंटरसेक्शन) पार करता है ताकि चालान से बच सके, पर इससे सामने से आ रहे यातायात के बारे में फैसला लेने की उसकी क्षमता कमजोर हो जाती है और अक्सर भिड़ंत होती है।

सीट बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा : चार पहियों के वाहन में सीट बेल्ट अब अनिवार्य है और इसे न बांधने पर दंडित किया जाता है। यही बात दुपहिया वाहनों में हेलमेट न लगाने पर लागू होती है। अध्ययनों में यह साबित होने पर कानून बनाया गया

things and reduce speed to remain safe during diversions and other kinds of outside distractions.

Red Light jumping: It is a common sight at road intersections that vehicles cross without caring for the light. The main motive behind red light jumping is to save time. The common conception is that stopping at red signal is wastage of time and fuel. Studies have shown that traffic signals followed properly by all drivers save time and commuters reach destination safely and timely. A red light jumper not only jeopardizes his own life but also the safety of other road users. This act by one driver incites other drivers to violate the rules and finally it causes chaos at crossing. This chaos at intersection is major cause of traffic jams. Eventually everybody gets late to their destinations. It has also been seen that the red light jumper crosses the intersection with greater speed to avoid challan but it hampers his ability to judge the ongoing traffic and quite often crashes.

Avoiding Safety gears like seat belts and helmets:

Use of Seat belt in four-wheeler is now mandatory and not wearing seat belt invites penalty. Same is the case with helmets for two wheeler drivers. Wearing seat belts and helmet has been brought under law after proven studies that these two safeguards reduce the severity of injury during accidents. Wearing seat belts and helmets doubles the chances of survival in a



है कि दुर्घटनाओं के दौरान ये दोनों सुरक्षा उपाय चोट की गंभीरता कम करती हैं। किसी भी गंभीर दुर्घटना में सीट बेल्ट और हेलमेट बांधने पर जीवन बचने की दुगुनी संभावना होती है। दुर्घटनाओं के दौरान सुरक्षा उपाय आपको सही और सुरक्षित रखते हैं। हेलमेट को अनिवार्य किए जाने के बाद दुपहिया वाहन सवारों की मौतों में भारी कमी आई है। हमें चाहिए कि निर्धारित मानकों विशेष रूप से आई एस आई मार्क के सुरक्षा साधनों का इस्तेमाल करें और अभीष्ट सुरक्षा के लिए उन्हें समुचित ढंग से लगाएं।

पर्यावरण पर यातायात के हानिकारक प्रभाव :

1. सुरक्षा
2. शोरगुल
3. जाम व भीड़-भाड़
4. वायु प्रदूषण
5. सौंदर्य बिगाड़ना।

सड़क पर विभिन्न कारणों से किस प्रकार दुर्घटनाएं होती हैं :

| | |
|-----------|--|
| ड्राइवर: | बहुत तेज गति से गाड़ी चलाना, अंधाधुंध ड्राइविंग, नियमों का उल्लंघन, चिन्ह न समझना, थकान, मदिरापान। |
| पदयात्री: | लापरवाही, अशिक्षा, गलत जगहों पर सड़क पार करना, वाहन मार्ग पर चलना, यातायात के नियमों का उल्लंघन करते हुए सड़क पार करना। |
| यात्री: | यात्रियों द्वारा अपने शरीर का कोई भाग बाहर निकालना, ड्राइवर के साथ बातचीत करना, गलत तरफ से नीचे उतरना और चढ़ना, पायदान पर रहकर सफर करना, दौड़कर बस पकड़ना आदि, हेलमेट, सीट बेल्ट का प्रयोग न करना। |
| वाहन: | ब्रेक्स या स्टीयरिंग का फेल होना, टायर |

serious accident. Safety gears keep you intact and safe in case of accidents. Two wheeler deaths have been drastically reduced after marking the use of helmet mandatory. One should use safety gears of prescribed standard (preferably ISI marked) and tie them properly for optimum safety.

Detrimental effects of traffic on environment

1. Safety
2. Noise
3. Jams & Congestion
4. Air Pollution
5. Degrading the Aesthetics

How different factors contribute to Accidents:

Drivers:

Over-speeding, rash driving, violation of rules, failure to understand signs, fatigue, alcohol consumption.

Pedestrian:

Carelessness, illiteracy, crossing at wrong places, moving on carriageway, Jaywalkers.

Passengers:

Projecting their body outside vehicle, by talking to drivers, alighting and boarding vehicle from wrong side, travelling on footboards, catching a running bus etc, non use of helmets, seat belts.

Vehicles:

Failure of brakes or steering, tyre burst, insufficient headlights, overloading, projecting loads.



फटना, अपर्याप्त हेडलाइटें, ओवरलोडिंग (अधिक वजनी लदान), लदे सामान का वाहन से बाहर निकला हुआ होना।

सड़क की स्थितियां: गहरे गड्ढे, क्षतिग्रस्त सड़क, कटी सड़क, ग्रामीण सड़कों का राजमार्गों से मिलना, मार्ग परिवर्तन (डायवर्जन), अवैध गति अवरोधक, अनुचित संकेत व चिन्ह, खराब प्रकाश व्यवस्था, खराब जामिति।

मौसम की स्थितियां: कोहरा, बर्फ, भारी वर्षा, आंधी-तूफान, ओलावृष्टि।

दुर्घटनाएं रोकने के लिए कदम :

1. सड़क सुरक्षा के बारे में शिक्षा और जागरूकता
2. सख्ती से कानून लागू करना
3. इंजीनियरिंग
(क) वाहन का डिजाइन (ख) सड़क का आधारभूत ढांचा

दुर्घटनाओं के सीधे परिणाम :

1. गंभीर चोट (मृत्यु) 2. चोट 3. सम्पत्ति की हानि।

भारत सरकार ने सड़क प्रयोक्ताओं के लिए सड़क सुरक्षा में सुधार करने हेतु अनेक कदम उठाये हैं, जिनका ब्यौरा निम्नानुसार है :

- यह सुनिश्चित किया गया है कि नियोजन स्तर पर ही सड़क सुरक्षा को सड़क अभिकल्प के अभिन्न अंग के रूप में लिया जाए।
- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क सुरक्षा में सुधार करने के लिए विभिन्न कदम उठाये हैं जैसे सड़क फर्नीचर, सड़क मार्किंग/सड़क चिन्ह, उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजमार्ग यातायात प्रबंधन प्रणाली आरंभ करना, निर्माण कार्य

Road Conditions: Potholes, damaged road, eroded road, merging of rural roads with highways, diversions, illegal speed breakers, improper signs and markings, poor lighting, poor geometry.

Weather conditions: Fog, snow, heavy rainfall, wind storms, hail storms.

Preventive measures for accidents:

- 1 Education and awareness about road safety
- 2 Strict Enforcement of Law
- 3 Engineering:
(a) Vehicle design (b) Road infrastructure

Direct Consequences of Accidents:

1. Fatality (Death)
2. Injury
3. Damage to Property

Govt. of India has taken several steps to improve road safety for road users which are as under:

- It is ensured that road safety is the integral part of road design at planning stage.
- Various steps to enhance road safety such as road furniture, road markings/road signs, introduction of Highway Traffic Management System using Intelligent Transport System, enhancement of discipline among contractors during construction, road safety audit on selected stretches, have been undertaken by



- के दौरान ठेकेदारों में अनुशासन को बनाये रखना, चुनिंदा क्षेत्रों पर सड़क सुरक्षा ऑडिट आदि।
- असंगठित क्षेत्रों में भारी मोटर वाहन चालकों के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है।
- राज्यों में ड्राइविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना।
- श्रव्य-दृश्य तथा प्रिंट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता पर प्रचार अभियान।
- सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों/व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार की प्रणाली आरंभ करना।
- वाहनों में सुरक्षा मानकों को और अधिक कड़े बनाना जैसे सीट बेल्ट, पावर स्टेयरिंग, रियर व्यू मिरर आदि।
- राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा योजना के अंतर्गत विभिन्न राज्य सरकारों/गैर-सरकारी संगठनों को क्रेन तथा एम्बुलेंस उपलब्ध कराना। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण भी अपने प्रचालन तथा अनुरक्षण संविदाओं के अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्गों पर पूरे किये गए प्रत्येक खंड के लिए 50 कि.मी. की दूरी पर एम्बुलेंस उपलब्ध करा रही है।
- राष्ट्रीय राजमार्गों को 2 लेन से 4 लेन का तथा 4 लेन से 6 लेन का करके उन्हें चौड़ा करना व सुदृढ़ बनाना आदि।
- सड़क सुरक्षा को सामाजिक अभियान बनाने के लिए युवाओं में जागरूकता का प्रचार।

National Highways Authority of India.

- Refresher training to Heavy Motor Vehicle drivers in the unorganized sector.
- Setting up of Driving Training School in the States.
- Publicity campaign on road safety awareness both through the audio-visual and print media.
- Conferment of National Award for voluntary organizations/individual for outstanding work in the field of road safety.
- Tightening of safety standards of vehicles like Seat Belts, Power-steering, rear view mirror etc.
- Providing cranes and ambulances to various State Governments/NGOs under National Highway Accident Relief Service Scheme. National Highways Authority of India also provides ambulances at a distance of 50 Km. on each of its completed stretches of National Highways under its Operation & Maintenance contracts.
- Widening and improvements of National Highways from 2 lanes to 4 lanes and 4 lanes to 6 lanes etc.
- Spreading awareness among youth to make road safety a social movement.



सड़क दुर्घटना के पीड़ितों की मदद

किसी भी दुर्घटना के पीड़ित को समय पर चिकित्सा सहायता देकर उसका जीवन बचाया जा सकता है।

‘द गोल्डन आवर’ (स्वर्णिम घंटा)

कोई भी चोट लगने के बाद का एक घंटा बहुत महत्वपूर्ण होता है। उस दौरान सड़क दुर्घटना के पीड़ितों को तत्काल और समुचित प्राथमिक चिकित्सा देने से उसका जीवन बचने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है और चोट की गंभीरता कम होती है। समय पर प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराकर कई मौतों तथा अशक्तताओं को टाला और चोट की गंभीरता की रोकथाम की जा सकती है।

ट्रौमा केन्द्रों की यह स्वीकार्य नीति है कि यदि चोट लगने के एक घंटे के भीतर, जिसे “स्वर्णिम घंटा” कहते हैं, आरंभिक स्वास्थ्य स्थिरता को बनाये रखने के लिए आधारभूत जीवन सहायक, प्रथम उपचार और द्रव्यों का प्रतिस्थापन प्रदान किया जाए तो अनेक दुर्घटना पीड़ितों की जान को बचाया जा सकता है। इसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि इस प्रकार की आपदा की स्थिति में उपचार के लिए निश्चित समयावधि के भीतर प्रशिक्षित कार्मिकों द्वारा आरंभिक स्थिरता, तीव्र परिवहन तथा चिकित्सा सुविधायें प्रदान की जाएं।

यह हमेशा मुमकिन नहीं है कि एक घंटे के भीतर पीड़ित तक समुचित चिकित्सा सहायता पहुंच जाए। ऐसे मामले में राहगीर और वहां मौजूद अन्य लोग घायल व्यक्ति (पहली सहायता करने वाले) को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान कर सकते हैं। लेकिन, कई बार पीड़ित व्यक्ति की अनुचित ढंग से देखभाल से स्थिति बिगड़ जाती है। दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की प्राथमिक चिकित्सा अधिक जटिल नहीं है, इसलिए हमें इसकी प्रक्रियाओं और ऐहतियातों के बारे में परिचित होना चाहिए।

Helping Road Accident Victims

Life of an accident victim can be saved by administering timely medical aid.

The 'GOLDEN HOUR'

The first hour after the trauma is called the 'golden hour'. Instant and proper first aid given to road accident victims during this hour increases the chance of survival manifold and reduces the severity of injuries. Many deaths and disabilities due to impact of injuries can be prevented with timely First Aid.

It is an accepted strategy of trauma care that if basic life support, first aid and replacement of fluids leading to initial stabilization can be arranged within first hour of the injury called 'Golden Hour', lives of many accident victims can be saved. Necessary activities to achieve are initial stabilization by trained manpower, rapid transportation and medical facilities to treat such cases of Trauma, all within a defined period of time.

It is not always possible that proper medical care reaches the victim within an hour. In that case the passerby, onlookers and other people (first responders) involved can provide the first aid to serious victims. However, improper handling of victims can worsen the situation. Though providing proper first aid to an accident victim is not so complicated, one should be aware of the procedures and precautions.



राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा योजना (एन एच ए आर एस एस)

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा योजना (एनएचएआरएसएस) नामक एक योजना आरंभ की है। इस योजना के अंतर्गत राहत एवं बचाव कार्यों के लिए राज्यों, संघ राष्ट्र क्षेत्रों/गैर सरकारी संस्थानों को क्रेनों तथा एम्बुलेंस उपलब्ध कराई जाती हैं ताकि सड़क दुर्घटना के पश्चात दुर्घटना के पीड़ितों को निकटवर्ती चिकित्सा सहायता केन्द्र तक पहुंचाया जा सके तथा दुर्घटना स्थल पर यातायात को सुगम बनाया जा सके।

इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की “ट्रोमा केन्द्रों के एकीकृत नेटवर्क की स्थापना” योजना के अंतर्गत स्वर्णिम चतुर्भुज में स्तरोन्नयित किये जाने वाले चिह्नित अस्पतालों को परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय द्वारा उन्नत लाईफ सपोर्ट एम्बुलेंस उपलब्ध कराए जाएंगे।

सड़क दुर्घटनाओं में मौत को लेकर एक गलत धारणा यह है कि अधिकतर मौतें गंभीर चोटों और खून बहने से होती हैं। वास्तविकता यह है कि सड़क दुर्घटना में मौत का सबसे सामान्य कारण ऑक्सीजन की पूर्ति रुकना है। अधिकतर मामलों में शरीर पर गहरे प्रभाव और सदमे के कारण वायु मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। आम तौर पर वायु मार्ग अवरुद्ध होने के चार मिनट से भी कम समय में मौत हो जाती है।

दुर्घटना से पीड़ित व्यक्ति के इलाज की प्राथमिकताओं पर ध्यान देना:

- श्वास में अवरोध (ऑक्सीजन न मिलना)
- हृदय के कार्य का एकदम से रुकना
- तीव्र रक्तस्राव (खून बहना)
- अन्य चोटें/बीमारियां

National Highway Accident Relief Service Scheme (NHARSS)

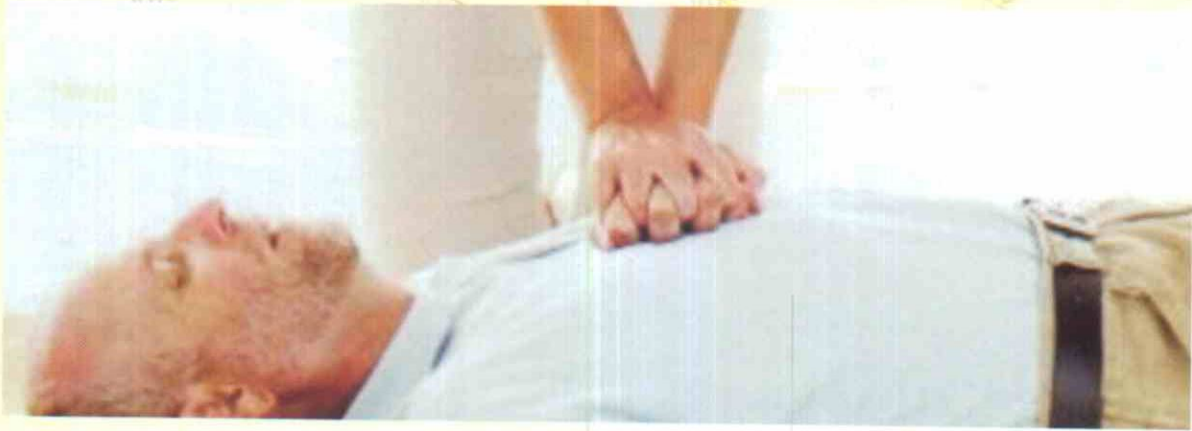
Ministry of Road Transport and Highways has come up with a scheme known as NHARSS. The scheme entails providing cranes and ambulances to States/ UTs/NGOs for relief and rescue measures in the aftermath of accidents by way of evacuating road accident victims to nearest medical aid centre and for clearing the accident site.

Further Ministry of Road Transport & Highways would provide advanced life support ambulances to identified hospitals to be upgraded under the Ministry of Health and Family Welfare's Scheme 'establishment of an integrated network of Trauma Centers' along the Golden Quadrilateral.

One of the misconceptions about road accidents death is that most of them happen due to sever injury and loss of blood. But reality is that most common cause of death in road accident is due to loss of oxygen supply. Most of the times it happens because airway gets blocked due to great impact and shock to body. Normally it takes less than four minutes for a blocked airway to cause death.

Priorities of treating an accident victim

- Asphyxia (loss of oxygen)
- Cardiac Arrest
- Severe Hemorrhage (Bleeding)
- Other Injuries/Illnesses



तत्काल आवश्यकता

संकटपूर्ण चार मिनट - किसी भी सड़क दुर्घटना में मौत का एक सबसे सामान्य कारण ऑक्सीजन की सप्लाई रुकना होता है। अधिकतर मामलों में इसका कारण वायु मार्ग का अवरुद्ध होना है।

याद रखें :

1. स्थल को सुरक्षित बनाएं
2. घायलों को खोजें
3. उनकी सहायता करें।
4. मदद के लिए बुलाएं और बेहोश पीड़ितों को खोजें।

ए बी सी के नियम का अनुसरण करें

- ए - एयरवे यानी वायु मार्ग - वायु मार्ग यानी सांस लेने का रास्ता खोलें
- बी - ब्रीदिंग यानी सांस लेना - मुंह से मुंह में सांस छोड़कर- (रिससाइटेशन) जीवन की बहाली में मदद करें।
- सी - सर्कुलेशन यानी रक्तसंचार - खून बहने को रोकें।

वायु मार्ग खोलना

- पीड़ित को धीरे से और सावधानीपूर्वक जमीन पर लिटाएं ताकि और चोट लगने से रोका जा सके।
- पीड़ित को एक ओर मोड़ें।
- गले, सीने और कमर पर कपड़े ढीले करें।
- सिर को पीछे की ओर झुकाएं, चेहरा नीचे करें ताकि जीभ आगे होकर खून और उल्टी बाहर आ सके।
- गंदगी, उल्टी, रक्त या मुंह से गिरे दांत हटाएं।

श्वसन बहाली - मुंह से मुंह में सांस छोड़ना-लेना। यदि पीड़ित सांस नहीं ले रहा है तो उसे कृत्रिम श्वसन दें।

IMMEDIATE REQUIREMENT

Critical four minutes - One of the most common causes of a road accident deaths is due to loss of oxygen supply. This is mostly caused by a blocked airway.

Remember:

1. Make the site safe
2. Look for the injured
3. Assist them
4. Call help and look for the unconscious victims

Follow the rule of ABC

A - Airway - Clear the airway i.e. breathing track

B - Breathing - Help restore it by mouth to mouth resuscitation

C - Circulation - Stop any bleeding

Clearing Airway

- Put the victim on ground very gently and cautiously without vigorous handling to prevent further injury.
- Turn the victim to one side
- Loosen clothing at neck, chest and waist.
- Tilt the head back, point the face slightly down so the tongue can fall forward allowing blood and vomit to drain out.
- Remove dirt, blood, vomit or loose teeth from mouth.

Restoring breath - mouth to mouth resuscitation. If the victim is still not breathing, give him artificial breathing.



- पीड़ित को पीठ की ओर लिटाएं और तत्काल मुंह से मुंह में सांस छोड़ें-लें।
- सिर को पीछे झुकाएं, जबड़ों को सहारा दें, गले से उंगलियां दूर रखें।
- मुंह से मुंह अच्छी तरह लगाएं ताकि आपके गाल पीड़ित के नाक पर रहे, सीना ऊपर उठने तक मुंह में फूंक मारें।
- अपना मुंह हटाएं, सीना ऊपर से नीचे जाने को देखें और नाक एवं मुंह से वायु निकलने को सुनें तथा महसूस करें।
- यदि सीना ऊपर नहीं उठता है तो जांच करें।
- बंद वायु मार्ग के लिए।
- मुंह से मुंह लगाएं।
- पीड़ित व्यक्ति का श्वसन बहाल होने तक मुंह से मुंह लगाकर सांस छोड़ें-लें। पीड़ित वयस्क के लिए प्रत्येक चार सेकेंड और बच्चे के लिए प्रत्येक तीन सेकेंड पर मुंह में सांस छोड़ें-लें।

रक्तसंचार : खून बहना रोकना

- खून बहने वाले धाव को साफ करें। कपड़े या बैंडेज के मोटे पैड की मदद से धाव पर सीधा दबाव डालकर खून बहना रोकें।
- जिन शारीरिक अंगों से खून बह रहा है, उसे रोकने के लिए उन अंगों को ऊंचा उठाएं।
- जिस जगह खून बह रहा है, वहां से बाहरी वस्तुएं हटाएं।
- धाव के चारों ओर पैड और बैंडेज लगाएं। हड्डियां टूटी दिखाई देने पर भी यही करें।

- Turn the victim onto the back and start mouth-to-mouth resuscitation immediately.
- Tilt head back, support jaw, keep your fingers clear of throat;
- With good mouth to mouth seal and your cheek sealing the victim's nose, blow into the mouth until the chest rises;
- Lift your mouth, turn your head to see chest fall and listen and feel for air escaping from nose and mouth.
- If chest does not rise, check;
- For blocked airway
- Mouth to mouth seal
- Continue mouth-to-mouth resuscitation until breathing is restored. Blow every four seconds with adults and every three seconds with children.

Circulation - stop any bleeding

- Uncover bleeding wound. Stop bleeding by direct pressure on the wound with thick pad of bandage or cloth.
- Bleeding limbs should be elevated to prevent bleeding.
- Do not remove foreign objects from bleeding wound.
- Apply pads and bandage them around the wound. Do the same if broken bones are visible.



सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

“चिकित्सा उपचार के लिए लाए गए प्रत्येक घायल नागरिक को तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि उसके जीवन की रक्षा की जा सके और तत्पश्चात कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया आरम्भ की जाए जिससे कि लापरवाही के कारण किसी की मृत्यु न हो। जब किसी चिकित्सक को तत्काल किसी घायल व्यक्ति की चिकित्सा करने के लिए बुलाया या अनुरोध किया जाता है तो इससे उस चिकित्सक को किसी प्रकार की कानूनी जटिलता का सामना नहीं करना पड़ता है। किसी व्यक्ति के जीवन की रक्षा करना न केवल चिकित्सक के लिए प्राथमिक दायित्व होना चाहिए बल्कि पुलिस तथा किसी अन्य नागरिक, जो इस प्रकार की घटना से संबंधित है या जिसने इस प्रकार की घटना को देखा है, उसका भी यह प्राथमिक दायित्व होना चाहिए।”

“भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया कोड, मोटर वाहन अधिनियम में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि किसी गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को या दुर्घटना के मामले में पुलिस के वहां पहुंचने तथा उस मामले की जांच-पड़ताल करने, प्रथम सूचना रिपोर्ट/एफआईआर तैयार करने तथा पुलिस द्वारा अन्य औपचारिकताओं से पूर्व डॉक्टर पीड़ित व्यक्ति को चिकित्सा उपचार नहीं दे सकता है”।

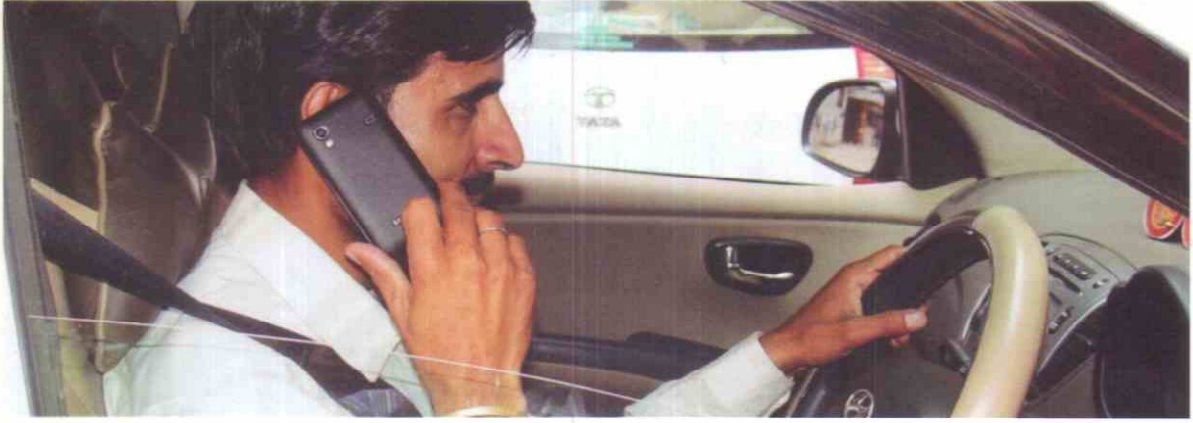
सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय: दंड रिट याचिका सं. 270.1988, डी/-28.8.1989 (एआईआर 1989 सर्वोच्च न्यायालय 2039) में पं. परमानंद कटारा बनाम केन्द्र सरकार।

Supreme Court Ruling

“Every injured citizen brought for medical treatment should instantaneously be given medical aid to preserve life and thereafter the procedural criminal law should be allowed to operate in order to avoid negligent death. There is no legal impediment for a medical professional when he is called upon or requested to attend to an injured person needing his medical assistance immediately. The effort to save the person should be the top priority not only of the medical professional but even of the police or any other citizen who happens to be connected with that matter or who happens to notice such an incident or a situation”.

“There are no provisions in the Indian Penal Code, Criminal Procedure Code, Motor Vehicles Act, which prevents doctors from promptly attending to serious injured persons and accident cases before arrival of the police and their taking into cognizance of such cases, preparation of FIR and other formalities by Police.”

Supreme Court Judgment: In the case of Pt. Parmanand Katara vs Union of India in Criminal Writ Petition No.270 of 1988, D/-28.8.1989 (AIR 1989 Supreme Court 2039).



ड्राइविंग में 9 सामान्य गलतियां

- 1. ध्यान खोना - ध्यान बंटना**
 - शांत बने रहें और ड्राइविंग पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करें।
 - अपने बाकी कार्यों पर नहीं, बल्कि अपनी यात्रा पर ध्यान केंद्रित करें।
- 2. अनिद्रा अवस्था में ड्राइविंग**
 - समय-समय पर या आवश्यकतानुसार रुकें / विश्राम करें।
 - सुनिश्चित करें कि लंबे सफर से पहले पर्याप्त विश्राम लें।
- 3. कार के भीतर ध्यान बंटना (सेल फोन, रेडियो, यात्री)**
 - ड्राइविंग करते समय सेल फोन के इस्तेमाल से बचें।
 - यात्रा शुरू करने से पहले यात्रा की योजना बनाएं और उसका अध्ययन करें।
- 4. मौसम की प्रतिकूल स्थितियों के मुताबिक चलने में विफलता**
 - वर्षा के दौरान गति कम करें।
 - वाहनों के बीच उचित दूरी बना कर रखें।
 - कम दिखाई देने पर परिस्थिति के अनुसार ध्यानपूर्वक गाड़ी चलाएं।
- 5. उदंडतापूर्वक ड्राइविंग (सामने के वाहन के बहुत नज़दीक गाड़ी चलाना, लाल बत्तियां और ठहरने के चिन्ह को लांघना)**
 - यात्रा के लिए अपने आपको पर्याप्त समय दें।
 - शांत बने रहें और सुरक्षित रूप से गाड़ी चलाएं।

9 Common Driving Mistakes

- 1. Losing attention - 'zoning out'**
 - Stay relaxed but totally focused.
 - Concentrate on your journey, not your pending issues.
- 2. Driving while drowsy**
 - Take breaks frequently or as required.
 - Make sure to get adequate rest before long trips.
- 3. Getting distracted inside car (cell phone, radio, passengers)**
 - Avoid using cell phone while driving
 - Plan and study your trip prior to commencing
- 4. Failing to adjust to adverse weather conditions**
 - Slow down in rain
 - Allow for longer stopping distances
 - Adjust for poor visibility
- 5. Driving aggressively (tailgating, jumping red lights, and stop signs, etc.)**
 - Allow yourself ample time to make the trip.
 - Remain calm and drive safely.



6. अन्य ड्राइवरो के इरादों का अनुमान लगाएं

- रक्षात्मक तरीके से गाड़ी चलाएं।
- अचानक होने वाली घटना के लिए सुरक्षा उपाय अपनाएं।
- अपने इरादे जताएं, मोड़ पर सिग्नल आदि का इस्तेमाल करें।
- यातायात चिन्हों का पालन करें।
- याद रखें कि आदर्श स्थितियों में गति सीमा एक निर्धारित कानूनी सीमा होती है, परिवर्तनों के लिए स्थान रखें।

7. आसानी से दिखाई न पड़ने वाले स्थानों की जांच किए बिना लेन बदलना

- सिग्नल दें, शीशे देखते हुए, सरसरी निगाह डालें।
- धीरे-धीरे लेन बदलें।

8. दुःखी अवस्था में गाड़ी चलाना

- इससे बचें क्योंकि यह नशे की अवस्था में गाड़ी चलाने के समान है।

9. वाहन के आवश्यक रखरखाव की अनदेखी करना (ब्रेक लाइट, घिसे हुए टायर्स आदि)

- प्रत्येक सप्ताह रखरखाव की जांच करें।
- प्रत्येक 15,000 किमी. पर ब्रेक पैड्स बदलें।
- घिसे हुए टायर बदलें।

6. *Anticipate about other drivers intentions*

- Drive defensively
- Allow cushion for the unexpected
- Make your intentions clear, use turn signals etc.
- Obey the traffic signs
- Remember the speed limit is the legal limit in ideal conditions, allow for deviations.

7. *Changing lanes without checking blind spots*

- Signal, check mirrors, then use quick glance
- Make lane changes gradually

8. *Driving while upset*

- Avoid this, as it is comparable to driving intoxicated.

9. *Ignoring essential auto maintenance (brake lights, bald tyres, etc.)*

- Do weekly maintenance checks
- Replace brake pads every 15000 kms.
- Replace worn out tyres



सड़क सुरक्षा के बारे में पदयात्रियों के लिए सुझाव

पदयात्री यातायात के सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं, लेकिन सड़क पर उनके लिए अधिक जोखिम होता है। सड़क पर सुरक्षित रहने के लिए उन्हें चाहिए कि वे सड़क की संरचनात्मक ढांचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग करें। सड़क पार करने के लिए सबवे (तलमार्ग), जेबरा क्रॉसिंग, फुट ओवर ब्रिज का उपयोग करना चाहिए। सड़क पार करने के शॉर्ट कट्स या आसान विकल्प खतरनाक हो सकते हैं और उनका सहारा नहीं लेना चाहिए।

सड़क पर निम्नलिखित सामान्य तरीके आपको सुरक्षित रखेंगे:

- ध्यानपूर्वक चलें।
- सामने से आ रहे यातायात को देखें।
- जब आप सड़क पार कर रहे हों तो कभी यह मानकर नहीं चलें कि ड्राइवर ने आपको देख लिया है। अपने जीवन की रक्षा आपकी अपनी जिम्मेदारी है।
- जहां ड्राइवर नहीं देख पाए, वहां सड़क पार करने से बचें।
- सड़क पार करने से पहले यातायात और आपके बीच उपयुक्त फासला होने का इंतजार करें।
- डिवाइडर रेलिंग्स के ऊपर से कभी भी न कूदें। आप लड़खड़ाकर वाहनों पर गिर सकते हैं।
- बच्चों के साथ सड़क पार करते समय उनका हाथ थामकर रखें।
- सुबह पैदल सैर और दौड़ने के लिए सड़क के इस्तेमाल से बचें।
- चढ़ाई पर या टेढ़ा रास्ता पार करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें।
- पार्क की गई या खड़ी कारों के बीच रास्ता पार न करें।

Road Safety Tips For Pedestrian

Though Pedestrian is the most important constituent of traffic, he belongs to the high risk group on road. In order to remain safe pedestrians should cultivate the habit of using road infrastructure in proper manner. Subways, Zebra Crossings, foot over bridges should be used to cross the road. Short cuts and easy options of crossing roads can be dangerous and should not be resorted to.

Simple actions on road will keep you safe:

- Walk with care.
- Look towards oncoming traffic.
- Never assume that driver has seen you when you are about to cross the road, it is your responsibility to save yourself.
- Avoid crossing road where drivers may not be able to see you.
- Wait for suitable gap in the traffic flow before crossing the road.
- Never jump over the divider railings. You may tumble on to the traffic.
- Always hold hands of children while crossing the road.
- Avoid using roads for morning walks and jogging.



- सबसे छोटा और सबसे सीधा मार्ग पार करने से सड़क पर आपके समय की बचत होती है।

सड़क के खतरों से बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं। सिर्फ वाहन के ड्राइवर के कारण ही दुर्घटनाएं नहीं होती हैं, बल्कि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है। अपने बच्चे को फुटपाथ पर चलना सिखाएं, उन्हें सबवे (तलमार्ग), जेबरा क्रॉसिंग आदि के उपयोग के लिए प्रेरित करें। यदि आप स्वयं सड़क पर सही ढंग से चलते हैं तो आपका बच्चा भी आपका अनुसरण करेगा और यातायात में सुरक्षित रहेगा।

अपने बच्चों को सड़क पार करने का आचरण/नियम सिखाएं।

10 वर्ष की आयु तक बच्चे स्वयं को सुरक्षित रखने के कौशल तथा क्षमताओं को विकसित कर लेते हैं। इसलिए, यह अत्यंत आवश्यक है कि जब कभी बच्चे बाहर निकल कर यातायात के आसपास जाएं तो उनके परिवार का कोई वयस्क सदस्य अनिवार्य रूप से उनके साथ हो। सड़क पार करते समय हर परिस्थिति में वयस्क को बच्चे का हाथ पकड़ कर रखना चाहिए।

- अपने बच्चे पर अत्यधिक भरोसा न करें। यह अत्यंत आवश्यक है कि आप अपने बच्चे को छोटी आयु से ही सिखाएं कि सड़क पार करने से पूर्व रुकें, देखें, सुनें और सोचने-समझने के पश्चात ही सड़क पार करें।
- सड़क पार करने से पूर्व फुटपाथ के किनारे से एक कदम पीछे ही रुकें।
- आते-जाते यातायात पर निगाह रखने के लिए सभी दिशाओं की ओर देखें। अपने बच्चों को भी सड़क पार करते समय सभी दिशाओं में देखने के लिए प्रोत्साहित करें न कि केवल बायें और दायें।
- आने व जाने वाले वाहनों की ध्वनि को सुनें।

- Take extra care if you have to cross the road on or near a crest or curve.
- Avoid crossing road between parked cars.
- Crossing road by the shortest and most direct route reduces your time on road.

Children are more susceptible to the dangers of road. It is not solely the drivers of the vehicles who cause accidents but carelessness of children and lack of awareness which add up to the cause of accidents on road. Teach your child to walk on footpath, encourage him/her to use subways, zebra crossing etc. If you will do the right thing on road, your child will also follow you and will remain safe in traffic.

Teaching your Child safe crossing behaviour.

Till the age of 10 years children may not have developed the skills and abilities to keep themselves safe. It is therefore, necessary that they should always be accompanied by an adult when in or around traffic. An adult should invariably hold child's hand while crossing the road.

- Do not overestimate your child. It is important to teach your child from an early age to STOP, LOOK, LISTEN and THINK before crossing.
- STOP one step back from the kerb.
- LOOK in all directions for approaching



- सोचें कि उस समय सड़क पार करना सुरक्षित है या नहीं। आने वाले वाहन के ड्राइवर के साथ आंखों का सीधा संपर्क रखें ताकि यह सुनिश्चित हो जाए कि उसने आपको देख लिया है।

सड़क पार करते समय सड़क पर सीधा चलें। सबसे छोटे व प्रत्यक्ष मार्ग से सड़क को तीव्रता के साथ पार करें किन्तु दौड़ें नहीं। सड़क पार करते समय अपना चहरा आने वाले यातायात की ओर ही रखें और वाहनों की ध्वनि को सुनते रहें।

बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं। इसलिए उनके समक्ष अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करें और हर बार सड़क पार करते समय हमेशा रुकें, देखें, सुनें और सोचें।

traffic. Encourage your child to turn his head, looking in all directions – not just left and right.

- LISTEN for approaching traffic.
- THINK whether it is safe to cross. Make an eye contact with drivers to ensure that they have seen you.

Face the approaching traffic and keep LOOKING and LISTENING for traffic while crossing.

Children take notice of what adults do. So set a good example and STOP, LOOK LISTEN and THINK every time you cross.



सुरक्षित साइकिल चलाने के बारे में चालकों को सुझाव

साइकिल सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाने वाला गैर-मोटरीकृत वाहन है, इसलिए साइकिल चलाने वाले व्यक्ति को यातायात के नियमों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। सड़क पर चोटग्रस्त होने वाले साइकिल सवारों में लगभग 40 प्रतिशत वे बच्चे होते हैं, जिनकी उम्र 16 वर्ष से कम होती है। इसलिए, सड़क पर साइकिल चलाना कभी नहीं सीखना चाहिए। किसी भी वयस्क व्यक्ति की मौजूदगी में पार्क या खेल के मैदान जैसे सुरक्षित स्थानों पर ही साइकिल चलाना सीखें। यदि आपको सड़क सुरक्षा से संबंधित प्राथमिक बातों की जानकारी नहीं है तो साइकिल चलाने के बारे में आपका ज्ञान अधूरा है।

हमेशा :

- साइकिल को सुचारु स्थिति में रखें। उसे चलाने से पहले ब्रेक, टायर, हवा के दबाव, घंटी, लाइट और चेन की जांच करें।
- यातायात नियमों का पालन करें। मुड़ते समय यातायात पर नज़र डालें और हाथ से संकेत दें।
- साइकिल पर क्षमता से अधिक भार न लायें। साइकिल एक या अधिकतम दो व्यक्तियों के बैठने के लिए होती है।
- सड़क की बायीं ओर चलें।
- ओवरटेकिंग से बचें। यदि सड़क संकरी है तो “एक कतार” में रहें।
- सड़क पर कलाबाजी न करें। हैंडल के दोनों डंडों पर अपने हाथ रखें।
- यदि उपलब्ध हो तो सिर्फ साइकिल मार्गों का उपयोग करें।
- सड़क पर हमेशा चौकस रहें।
- रात को चटकीले रंग के कपड़े पहनें और चमकती लाइट रखें।
- साइकिल पर रिफ्लेक्टिव (परावर्तक) टेप लगाएं, ताकि वह रात में भी दिखाई दें।

Safer Cycling Tips For Cyclist

As bicycle is the most popular and widely used non-motorized vehicle, a cyclist should know the traffic rules. Almost 40 percent of injuries & fatalities of cyclists happen to children below 16 years. Never learn cycling on public roads. Learn it in safer places like parks or play grounds in the presence of an adult. Your knowledge of cycling is incomplete, if you do not know the basics of road safety

Always:

- Keep cycle in working condition. Check brakes, tyre, air pressure, bell light and chain before you ride it.
- Obey traffic signals. While taking turns watch out for traffic and give signal by hand.
- Do not overload. Cycle is for one and maximum for two.
- Move on the left side of the road.
- Avoid overtaking. Be in single file if the road is narrow.
- No acrobatics on road, keep both hands on the handle bar.
- If available use only cycle tracks.
- Remain constantly alert on the roads.
- Wear bright clothes and have bright light at night.
- **Use reflective tape on cycle to make it visible at night.**



अपनी स्कूल बस के बारे में जानें

स्कूल बस की सुरक्षा सभी अभिभावकों, शिक्षकों और बस स्टाफ की जिम्मेदारी है। हमारी जिम्मेदारी सिर्फ बस स्टॉप पर समाप्त नहीं होती। हमें अपने बच्चों को समुचित और सुरक्षित ढंग से स्कूल बस के उपयोग के बारे में सिखाना चाहिए।

बच्चों को सिखाना चाहिए कि जब वे स्कूल बस में चढ़ें तो :

- जल्दबाजी न करें, बस के रुकने का इंतजार करें।
- एक कतार में रहकर बस में प्रवेश करें।
- रेलिंग पकड़कर बस में प्रवेश करें।
- देख लें कि आपका बैग या कपड़े आदि कहीं भी न फंसे।
- सीधे अपनी सीट पर जाकर बैठ जाएं।

बस में यात्रा करते हुए :

- सीट पर समुचित ढंग से बैठें और चेहरा सामने रखें।
- अपने शरीर का कोई भी अंग बस से बाहर न निकालें।
- पायदान पर यात्रा न करें।
- बस का गलियारा खाली रखें।
- शोरगुल न करें और ड्राइवर का ध्यान न बटाएं।
- ड्राइवर और कंडक्टर के निर्देशों का पालन करें।

बस से उतरते समय :

- जल्दबाजी न करें, बस के रुकने का इंतजार करें।
- रेलिंग का उपयोग करते हुए बस से उतरें।
- बस के अगले दरवाजे से बाहर निकलें।
- उतरते समय ड्राइवर आपको देख सके।
- खोई चीजें वापस लेने के लिए बस के नीचे न जाएं।
- बस के पीछे न चलें, जहां ड्राइवर नहीं देख सकता।

Know Your School Bus

School bus safety is the responsibility of parents, teacher and bus staff. Our responsibility does not end at bus stop. We should teach our children to use the School bus properly and safely.

Children should be taught about boarding the bus:

- Do not hurry, wait till the bus stops.
- Enter the bus in single file line.
- Hold hand rail and enter.
- Ensure that your bag or clothes don't get stuck anywhere.
- Go straight to your seat.

While traveling in bus:

- Be seated properly and face forward.
- Do not put any part of your body outside the bus.
- Do not travel on footboard.
- Keep the aisle clear.
- Do not make much noise and distract driver.
- Follow the instruction of driver and conductor.

While alighting the bus:

- Do not be in a hurry, wait till the bus stops.
- Use handrail to get off the bus.
- Exit from the front door of the bus.
- Be visible to the driver while alighting.
- Do not crawl under the bus to pick up lost things.
- Never move behind the bus, the blind spot of driver.



पार्किंग

पार्किंग ड्राइविंग शिष्टाचार का एक अभिन्न अंग है। आप चाहे कितने ही अच्छे ड्राइवर क्यों न हों यदि आप अपने वाहन को सही प्रकार से पार्क नहीं कर पाते हैं तो आपको ड्राइविंग के कुछ और पाठ सीखने होंगे। पार्किंग के दौरान निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए:

- सदैव प्राधिकृत पार्किंग में ही अपना वाहन पार्क करें।
- यदि आप पार्किंग में वाहन को लगाने में स्वयं को सक्षम नहीं पाते हैं तो पार्किंग के लिए किसी पार्किंग सहायक से मदद ले लें।
- फुटपाथ के कोने पर लम्बाई में वाहन को पार्क करते समय वाहन को सदैव खाली स्थान पर आगे से पीछे की ओर रिवर्स करके पार्क करें।
- पार्किंग के दौरान सदैव इंडीकेटर का प्रयोग करें।
- समानांतर पार्किंग का प्रयोग करें।
- पार्क करने के पश्चात अपनी कार का दरवाजा खोलते समय यह सुनिश्चित कर लें कि वह दूसरे वाहन से न टकराए।
- पार्किंग में सदैव कार के हैंडब्रेक को लगाकर रखें।
- ढलान व पहाड़ी क्षेत्रों में वाहन को पार्क करते समय यदि ढलान पीछे की ओर है तो वाहन में आगे का गियर लगाएं और यदि ढलान वाहन के आगे की ओर है तो वाहन को रिवर्स गियर में रखें।
- हमेशा हैंडब्रेक को खींचकर रखें जब तक सहायक न कहें।
- पार्किंग सहायक से पार्किंग की रसीद लेना न भूलें।
- सड़क पर “यहां खड़े न हों/यहां प्रतीक्षा न करें/यहां पार्किंग न करें” चिन्हित बोर्डों का अनुपालन करें।
- अव्यवस्थित रूप से अपने वाहन को पार्क न करें जिससे कि अन्य ड्राइवरों को समस्या का सामना न करना पड़े।
- पार्किंग में खड़े अपने वाहन में मूल्यवान वस्तुएं न छोड़ें।
- पार्किंग में खड़े वाहन में बच्चों को छोड़कर तथा वाहन को लॉक करके न जाएं।
- रात्रि के समय वाहन पार्क करते समय पार्किंग लाइट जलाकर रखें।
- पार्किंग के लिए झगड़े से बचें।

Parking

Parking is an integral part of driving etiquettes. How good driver you may be but if you cannot park your vehicle properly, you still have to learn few lessons on driving.

- Always look for authorized Parking.
- If you are not apt at maneuvering vehicle at parkings, ask attendant to do it.
- While parking through the length of kerb always try to park vehicle by reversing it into the space. It allows you more maneuverability.
- Always use your indicators while parking.
- Opt for parallel parking.
- While opening door of a car ensure it doesn't bang another car.
- While parking in areas with slope and hilly areas keep the vehicle in forward gear. If the slope is towards the front of the vehicle, park it with gear in reverse position.
- Always pull hand brake unless asked by the attendant.
- Do not forget to take receipt from the parking attendant.
- Respect No standing/No waiting/No parking zones on road.
- Do not park the vehicle in haphazard manner, which may cause problems to other drivers.
- Avoid keeping your valuables in parked car.
- Never leave children in a parked and locked car.
- At night park your vehicles with parking lights on.
- Avoid parking brawls, it is also a form of road rage.



वाहन का रखरखाव

वाहनों का रखरखाव ऐसा तथ्य है जिसकी हम सभी अनदेखी करते हैं जब तक कि हमारा वाहन खराब नहीं हो जाता। तब हम सोचते हैं कि वाहन में क्या खराबी आ गई है। अनुरक्षण वाहन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। यह वाहन की लंबी आयु, उसका कुशल निष्पादन तथा विश्वसनीयता का निर्धारण करती है। वाहन के अनुरक्षण से तात्पर्य वाहन के बाहरी पेंट की देखरेख तथा उसे साफ-सुथरा रखने से कहीं अधिक है।

अनुरक्षण से तात्पर्य वाहन के सभी कल-पुर्जों की देखरेख है, जो कि बोनट के अंदर भी है। बोनट के भीतर के पुर्जे ही प्रत्यक्ष रूप से वाहन के कुशल कार्यनिष्पादन से संबंधित होते हैं। वाहन को नियमित अंतराल पर सर्विस स्टेशन ले जाने के अतिरिक्त आपको वाहन स्वामी नियमावली का भी अवलोकन करना चाहिए जिसमें वाहन के दैनिक अनुरक्षण की जानकारी उपलब्ध होती है।

बैटरी की जांच करना, तेल की निरंतर जांच, तेल को बदलना, विद्युतीय प्रणाली की जांच कुछ ऐसे अपरिहार्य कारक हैं कि वाहन को अच्छी स्थिति में रखने के लिए जिनकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

- सही ढंग से अनुरक्षित वाहन ईंधन व धन की बचत करता है, दीर्घकालीन अनुरक्षण लागतों को कम करता है, हानिकारक रेचन उत्सर्जनों को न्यूनतम बनाता है। एक सुअनुरक्षित वाहन उस समय भी अधिक विश्वसनीय व मूल्यवान होता है जब आप इसे बेचने जाते हैं।
- वाहन की स्वामी नियमावली को ध्यानपूर्वक पढ़ें ताकि आप वाहन के अनुरक्षण कार्यक्रम तथा आवश्यकताओं से भली-भांति परिचित हो सकें। विभिन्न वाहनों का अनुरक्षण कार्यक्रम भिन्न-भिन्न होता है और वाहन के विनिर्माता को इसका सर्वोत्तम ज्ञान होता है।

Maintenance of Vehicle

Maintenance of vehicle is something most of us ignore until our vehicle stops functioning. And then we wonder what went wrong. Maintenance is one of the most neglected aspects of vehicle. It determines the longevity, performance and reliability of vehicle you drive. Maintenance of vehicle is lot more than taking care of its external coat of paint and keeping it clean and shiny.

Maintenance means taking care of all the parts, even those that are inside the bonnet. These are the ones that directly concern the performance of your vehicle. Besides taking it to the service station at regular periods, it is a good idea to go through the owner's manual that will give a fair idea about its routine maintenance.

Checking the battery, keeping a check on the oils, changing the oils, checking the electrical system, are some of the absolutely unavoidable things to keep your vehicle in good shape.

- Properly maintained vehicle will save fuel and money, reduce your long-term maintenance costs and minimize harmful exhaust emissions. A well-maintained vehicle is also more reliable and will worth more when you want to resell it.
- Read the owner's manual carefully to become familiar with your vehicle's maintenance schedule and requirements. Maintenance schedules vary widely from one vehicle to another – the manufacturer of your vehicle knows better.



- अपने वाहन की सर्विसिंग एक प्रशिक्षित वाहन विशेषज्ञ से ही कराना लाभदायक होता है। उनके पास वाहन में खराबी का पता लगाने व उसे ठीक करने के लिए उचित ज्ञान तथा औजार उपलब्ध होते हैं।
- सदैव आईएसआई या आईएसओ चिन्हित मोटर ऑयल का ही प्रयोग करें। तेल में पैसा बचाकर दीर्घकालीन समस्याएं उत्पन्न हो सकती है और वाहन बार-बार खराब हो सकता है। सस्ते तेल न केवल वाहन के इंजन को खराब करता है बल्कि इंजन की कुशलता तथा वाहन के माइलेज को भी कम करता है।
- वास्तविक तथ्य यह है कि यदि वाहन का उचित अनुरक्षण न किया जाए तो आपके वाहन की यांत्रिकी प्रणाली वाहन की ईंधन कुशलता को प्रभावित कर सकती है। इंजन की जांच करने, कूलिंग तथा इग्निशन प्रणाली, ब्रेकों तथा सस्पेंशन तथा उत्सर्जन-नियंत्रण प्रणाली की जांच व परीक्षण के लिए विनिर्माता द्वारा दिए गए निर्देशों का अनुपालन करें।
- वाहन को 8 पीएसआई फुलाव के अंतर्गत केवल एक टायर से चलाने के कारण टायर की आयु 15000 कि.मी. तक कम हो सकती है और वाहन की ईंधन खपत 4 प्रतिशत बढ़ सकती है। उन्नत ईंधन कुशलता तथा संवर्धित सुरक्षा के लिए टायरों के अनुरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- तीव्र गर्मी तथा तीव्र सर्दी के मौसम के दौरान आपके टायरों को विशेष रख-रखाव की आवश्यकता होती है। ठंडा तापमान टायरों में वायु के दबाव को कम करता है जिससे बर्फ तथा कीचड़ के कारण चल-प्रतिरक्षण को बढ़ा देता है, जबकि गर्मियों के मौसम में ताप टायर में दबाव को बढ़ा देता है। टायरों में वायु के दबाव की नियमित जांच की जानी चाहिए विशेष रूप से तापमान में तीव्र परिवर्तन के दौरान।
- खराब रूप से अनुरक्षित वाहनों में ईंधन की खपत 15 प्रतिशत तक बढ़ सकती है और इससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी कई गुणा बढ़ जाता है।
- It is best to get servicing of your vehicle done by the trained automotive professionals. They have the knowledge and tools to diagnose and correct problems.
- Always purchase ISI or ISO marked motor oils. Saving money on oils can lead to long term problems and frequent break downs of the vehicle. Cheap oils not only spoil the machine but also reduces the efficiency of engine and mileage of the vehicle.
- Virtually all of your vehicle's mechanical systems can affect fuel efficiency if not properly maintained. Follow the manufacturer's recommendations for checking the engine, cooling and ignition system, brakes, suspension and emission-control system.
- Operating a vehicle with just one tyre under-inflated by 8 psi can reduce the life of the tyre by 15 000 kilometers and increase the vehicle's fuel consumption by 4 percent. For improved fuel efficiency and enhanced safety, give your tyres the attention they need.
- Your tyres need special attention during extreme winter and extreme summers. Cold temperatures decrease the air pressure in tyres, which adds to the rolling resistance caused by snow and slush, while in summers heat increases the pressure in tyres. Measure tyre pressure regularly, especially after a sharp drop in temperature.
- A poorly maintained vehicle can boost fuel consumption by up to 15 percent and also increase greenhouse gas emissions manifold.



विशेष परिस्थितियों में ड्राइविंग

कोहरा

कोहरे के दौरान गाड़ी चलाते समय गति कम करें और हेडलाइट को ऑन रखें। हेडलाइट को हमेशा नीची (लो) बीम मोड में रखें ताकि आप सड़क को पूरी तरह से देख सकें। कोहरे के दौरान उच्च बीम सहायक नहीं होती है क्योंकि कोहरे के आर-पार देखा नहीं जा सकता। यदि आपके वाहन में फॉग लैम्प लगे हैं तो उन्हें ऑन रखें। कोहरे में न सिर्फ देखना महत्वपूर्ण है, बल्कि दूसरे को दिखाई देना भी महत्वपूर्ण है। हमेशा चौकस रहें और निम्नलिखित ऐहतियाती कदम उठाएं :

- कोहरे में हमेशा धीमी गति से गाड़ी चलाएं।
- अपने वाहन की हेडलाइट को ऑन रखें और नीची (लो) बीम मोड में रखें।
- सुनिश्चित करें कि दूसरों को आप दिखाई दे रहे हैं। अपने वाहन के फॉग लैम्प और पार्किंग लाइट ऑन रखें।
- डिफ्रोस्टर और विंडस्क्रीन वाइपर का इस्तेमाल करें।
- वाहनों के बीच सुरक्षित दूरी बनाए रखें।
- अगर गाड़ी चलाना असम्भव हो तो उसे किनारे पर खड़ी करें और सारे इंडीकेटर आन कर दें।

पहाड़ पर ड्राइविंग

पहाड़ों पर वाहन चलाना मुश्किल होता है और अनुभवी एवं निपुण ड्राइवर को ही यह करना चाहिए। जटिल भौगोलिक स्थिति होने के कारण पहाड़ों पर गाड़ी चलाना मैदानी इलाकों की तुलना में कठिन

Driving Under Special Conditions

Fog

While driving in fog, reduce speed and turn headlights on. Always keep headlight on low beam mode, so that you can see road properly. The high beam does not help in fog as one cannot see through fog. If your vehicle has fog lamps turn them on. While in fog, not only seeing is important, but also being seen is important. Always be attentive and take some precautions as follows:

- Always drive slow in fog
- Turn on your headlights and keep them in low beam mode
- Make sure that you are seen. Turn on your fog lamps and parking lights
- Use defroster and windscreen wipers
- Always keep safe distance between vehicles
- If it is really impossible to drive pull off completely and keep your blinkers on

Hill Driving

Hill driving is difficult task and should be undertaken by experienced and apt drivers. Hill driving is different from driving in plain areas due to complex topography. Roads are designed differently in hills. The view of driver is restricted due to innumerable turns and suffers



होता है। पहाड़ों में सड़कों का डिजाइन भिन्न प्रकार का होता है। असंख्य मोड़ होने के कारण ड्राइवर की दृष्टि सीमित दायरे पर होती है। वाहन को इधर-उधर मोड़ते रहने से ड्राइवर अधिक थकता है। पहाड़ों पर ड्राइविंग के दौरान ड्राइवर को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- यदि आप निपुण ड्राइवर नहीं हैं तो पहाड़ी सड़कों पर वाहन न चलाएं।
- गति सीमा का हमेशा पालन करें व मोड़ पर गति कम करें।
- हमेशा चौकस रहें और कार स्टीरियो आदि जैसी चीजों के कारण ध्यान भंग न होने दें।
- पहाड़ पर चढ़ने वाले यातायात को हमेशा रास्ता दें।
- कभी भी शराब पीकर वाहन न चलाएं।
- मोड़, धुमाव और पुल आदि पर ओवरटेक न करें।
- वाहन पर क्षमता से अधिक लदान न करें।
- मोड़ और कैची मोड़ पर क्लच पैडल के इस्तेमाल से बचें।
- पहाड़ से उतरते समय वाहन को न्यूट्रल में न चलाएं।
- मोड़ पर हमेशा हॉर्न बजाएं।
- पहाड़ पर यात्रा शुरू करने से पहले हमेशा वाहन, खासकर ब्रेक्स और टायर, की जांच कर लें।

रात में ड्राइविंग

रात में ड्राइविंग के दौरान दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं अधिक होती हैं।

अंधेरे में ड्राइविंग खतरनाक भी होती है और चुनौतीपूर्ण भी। रात

more fatigue due to excessive maneuvering of vehicle.

While driving on hill, driver should take care about following points:

- If you are not apt driver, do not drive on hilly roads.
- Always follow the speed limits and reduce speed at turns.
- Always be attentive and avoid distractions like car stereos etc.
- Always give priority to uphill traffic by giving it way.
- Never drive in hills under the influence of alcohol.
- Do not overtake on turns, curves and bridges.
- Do not overload the vehicle.
- Avoid using clutch pedal at turns and hairpin bends.
- Do not run vehicle on neutral while driving down hill.
- Always blow horn on turns.
- Always check the vehicle specially brakes and tyres before starting hill journey.

Night Driving

Accidents more likely when driving at Night

Darkness can make driving a dangerous as well



के समय ड्राइविंग अधिक खतरनाक हो जाती है क्योंकि रात में आपकी दृश्यता दूरी कम हो जाती है।

रात के दौरान ड्राइविंग को सुरक्षित बनाने के उपाय :

- यह सुनिश्चित कर लें कि आपके वाहन की सभी हेडलाइट, टेललाइट तथा दिशा संकेतक सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं।
- रात के समय वाहन को धीमी गति से चलाएं।
- अपने वाहन तथा अन्य वाहनों के बीच अधिक दूरी बनाकर चलें।
- सुप्रकाशित मार्गों पर लो-बीम पर गाड़ी चलाएं अर्थात हेडलाइट को डिप डाउन पर रखें।
- धुंध के मौसम में सदैव लो-बीम पर गाड़ी चलाएं।
- रात के समय सड़क पर कभी भी वाहन को खड़ा न करें क्योंकि रात्रि में दूर से आने वाले वाहन को यह पता नहीं चल पाता है कि सामने वाला वाहन खड़ा है या चल रहा है और तब तक काफी देर हो चुकी होती है।
- कभी भी नशे में गाड़ी न चलाएं। शराब व्यक्ति की नेत्रों की क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।
- रात के समय जब रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप पर प्रकाश पड़ता है तो वह चमकती है। अब सड़क पर वाहन खराब होने पर उसके पीछे रेट्रो रिफ्लेक्टिव ट्राइएंगल रखना अनिवार्य है। रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप आपकी दृश्यता को सुनिश्चित करता है फिर चाहे वाहनों की टेल लाइट खराब ही क्यों न हो। अपनी व वाहन की सुरक्षा के लिए रात के समय इसका प्रयोग अवश्य करें।

वर्षा के दौरान ड्राइविंग

वर्षा के मौसम में ध्यान रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्षा के दौरान तथा बर्फ पड़ते समय वाहन की ब्रेक अपनी क्षमता से कम काम करती है।

as challenging job. Night driving is more dangerous as your visibility space becomes limited at night.

Tips to make night driving safer :-

- Make sure vehicle headlights, taillight and directional signals are operational.
- Drive slowly at night
- Keep more space between your vehicle and other vehicles.
- Only use high beams in dark or remote areas where you can't see the road surface ahead.
- On well lit corridors, drive with low beam, i.e., head lights dipped down.
- Always use low beam when driving in fog.
- Never stop on any roadway at night, it is hard for an approaching driver to tell whether or not a stopped car is moving until it is too late.
- Never drink and drive. Alcohol can drastically slow the direct effect of eye's sensibility.
- Retro-reflective tapes reflect when light falls on it during night. Now it is also mandatory to keep Retro-reflective triangle behind the vehicle during breakdown. Retro-reflective tapes ensure your visibility even when vehicle taillights go off. Always use it to be safe at night.

Driving in rain

The most important thing to remember is that brakes perform below their capacity during rain and snowfall.



वर्षा के दौरान निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए:

1. वाहन को धीमी गति से चलाएं।
2. बार-बार ब्रेक पैडल को दबाते रहें ताकि पता चल सके कि ब्रेक सही कार्य कर रही है या नहीं।
3. अपने विंड-स्क्रीन वाइपरों तथा डैमिस्टर्स का निरन्तर प्रयोग करते रहें।
4. कई बार बारिश के पानी तथा तेल के कारण सड़कें फिसलन भरी हो जाती हैं। इस प्रकार की स्थिति में वाहनों के फिसलने की संभावना बढ़ जाती है। दुपहिया वाहन चालकों को ऐसी स्थिति में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।
5. अपने वाहन तथा अन्य वाहनों के बीच की दूरी बढ़ा लें ताकि आवश्यकता पड़ने पर आपको अपना वाहन रोकने के लिए समय व अंतर मिल सके।
6. तीखे मोड़ न काटें।
7. यदि तेज वर्षा हो रही हो तो अपने ब्लिंकर ऑन रखें।
8. पानी से भरी सड़कों पर वाहन सावधानीपूर्वक तथा धीमी गति से चलाएं क्योंकि सड़कों पर गड्ढे हो सकते हैं।
9. यदि आपके वाहन में पावर ब्रेक नहीं हैं तो अपने वाहन को अधिक सावधानीपूर्वक तथा अत्यंत धीमी गति से चलाएं।
10. जरूरी न हो तो ओवरटेकिंग न करें।
11. अगर आप कुशल चालक नहीं हैं तो पहाड़ी सड़क पर बारिश के दौरान गाड़ी न चलाएं।
12. सुनिश्चित कर लें कि आपके वाहन के टायर सही प्रकार से अनुरक्षित हों तथा उनका तला साफ व सही स्थिति में हो।
13. समझदारी से वाहन को चलाएं तथा पानी से भरी सड़कों पर तीव्र गति से न चलाएं अन्यथा उसके छींटे अन्य सड़क प्रयोक्ताओं पर पड़ सकते हैं।
14. अपने मड-फ्लेप को सही स्थिति में रखें।
15. मानसून के दौरान अपने वाहन में छाता अवश्य रखें।

Following should be kept in mind during rain:

- 1 Drive slow.
- 2 Keep pedalling your brakes to check their performance.
- 3 Use your wind-screen wipers and demisters.
- 4 Sometimes road becomes slippery because of the mixture of rain water and oil. Vehicle skids on such surfaces. So two wheeler drivers must take extra care.
- 5 Increase the distance between two vehicles, so that you get time to stop your vehicle.
- 6 Do not take sharp turns.
- 7 If rain is heavy, keep your blinkers on.
- 8 Drive carefully and slow through water inundated roads as there could be potholes.
- 9 If you do not have power brakes in your vehicle, drive more cautiously and dead slow.
- 10 Do not overtake unnecessarily.
- 11 If you are not apt driver do not drive on hills during heavy rains.
- 12 Ensure your tyres are properly maintained, with clean and visible treads.
- 13 Drive sensibly; do not speed up through collected water to splash it on others.
- 14 Keep your mud flaps in good condition.
- 15 Always keep umbrella in your vehicle during monsoon.



सड़क सुरक्षा के विषय में सरकारी नीतिया

वर्ष 2012 के दौरान भारत में लगभग 5.0 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुई थीं, जिनमें 1.42 लाख लोगों की मृत्यु हुई और 5.27 लाख लोग घायल हुए। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत में प्रति एक मिनट में एक सड़क दुर्घटना होती है और सड़क दुर्घटना में प्रति चार मिनट में एक मृत्यु होती है। हालांकि ये आंकड़े अनेक विकसित और विकासशील देशों की तुलना में कम हैं, किन्तु यह तथ्य आत्मसंतोष का विषय नहीं हो सकता। सड़क दुर्घटना में हुई प्रत्येक मृत्यु उसके परिवार तथा राष्ट्र के लिए भारी हानि है।

चालक की गलती सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण होती है। जानकारी का अभाव तथा लापरवाहीपूर्ण ड्राइविंग के कारण सड़क पर गलतियां होती हैं, जिसके कारण सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। नीचे दुर्घटनाओं का कारणवार ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है:

| क्र.सं. | कारण | प्रतिशत |
|---------|--------------------------|---------|
| 1. | चालक की गलती | 78.0% |
| 2. | पैदल चलने वाले की गलती | 2.7% |
| 3. | साइकिल चालक की गलती | 1.2% |
| 4. | सड़क की खराब स्थिति | 1.2% |
| 5. | मोटर वाहन की खराब स्थिति | 1.7% |
| 6. | मौसम संबंधी परिस्थितियां | 1.0% |
| 7. | अन्य | 14.2% |

दुर्घटनाओं को कम करने के उपाय

विश्वभर में दुर्घटनाओं के निवारण व नियंत्रण के मुख्य उपाय निम्नलिखित हैं:

- 1) शिक्षा

Government Policies on Road Safety

There were around 5.0 lakh road accidents which resulted in death of 1.42 lakh people and injured more than 5.27 lakh in India during 2012. This means there is one road accident every minute and one road death every four minutes in India. Though these figures are low as compared to many developed and developing countries, there should not be any complacency in this regard. Even one life lost on road is great loss to a family and to the nation.

Major cause of road accidents are mainly due to fault of driver. Less informed and casual driving results in faults on road which lead to accidents. Following is the cause-wise break-up of the accident:

| SN. | Cause | Percentage |
|-----|--------------------------------------|------------|
| 1. | Fault of driver | 78.0% |
| 2. | Fault of pedestrian | 2.7% |
| 3. | Fault of cyclist | 1.2% |
| 4. | Defect in road conditions | 1.2% |
| 5. | Defect in condition of motor vehicle | 1.7% |
| 6. | Weather condition | 1.0% |
| 7. | Other | 14.2% |

Measure to Minimize accidents

The main thrust of accident prevention and control across the world has been on 4 Es

- i. Education



- II) प्रवर्तन
 III) इंजीनियरिंग
 IV) पर्यावरण तथा आपातकालीन देखरेख
 दो और उपायों की पहचान की गई है यथा इंजीनियरिंग (वाहन) तथा विधिकरण।

छोटे स्तर पर की गई भारत सरकार द्वारा पहलें

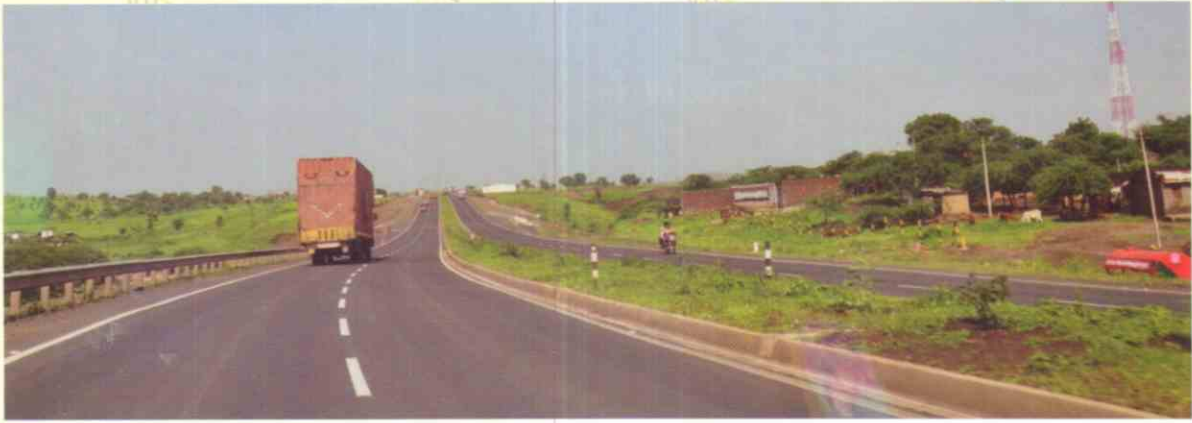
- ब्लैक स्पॉटों की पहचान करना तथा उनका उपचार करना।
- राज्य सड़क सुरक्षा परिषदों तथा जिला समितियों की स्थापना करना।
- क्षमता से अधिक भार लादने (ओवर-लोडिंग) तथा शराब पीकर वाहन चलाने के विरुद्ध कार्रवाई करना तथा राष्ट्रीय राजमार्गों पर शराब की दुकानों को हटाना।
- चौपहिया वाहनों में सीटबेल्टों के प्रयोग तथा दुपहिया वाहन के चालकों द्वारा आईएसआई मार्क के हेलमेटों के प्रयोग के नियम को कड़ाई से लागू करना।
- एम्बुलेंस सहित एक समर्पित सामान्य टेलीफोन नंबर वाले 24x7 के कॉल सेंटरों की सहायता से आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं विकसित करना। इस समय टोल फ्री नंबर 102, 108 तथा 1073 के माध्यम से उपलब्ध एम्बुलेंस सेवा सुविधा को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सेवा तथा राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना राहत सेवा योजना (एनएचआरएसएस) के अंतर्गत मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई जा रही एम्बुलेंस सेवा के साथ एकीकृत करने का प्रस्ताव है। यह नेटवर्क राष्ट्रीय राजमार्गों पर प्रत्येक 50 कि.मी. पर आपातकालीन चिकित्सा सुविधाओं के माध्यम से 8-10 मिनट में प्राथमिक दुर्घटना प्रतिक्रिया उपलब्ध कराएगी।

- ii. Enforcement
 iii. Engineering
 iv. Environment and Emergency care

Two more Es viz Engineering (vehicle) and Enactment have been identified.

Micro level initiatives of Government of India

- Identification of black spots and treatment thereof.
- Setting up of State Road Safety Councils and District Committees.
- Action against over-loading, action against drunken driving and removal of liquor shops on National Highways.
- Enforcement of use of seat belt by four wheelers and use of ISI helmets by two wheelers.
- Developing emergency medical services by having a 24 x 7 call centres with a dedicated common telephone number backed by ambulances. The ambulances facilities presently available through Toll free numbers 102, 108 and 1073 is proposed to be integrated with the ambulances being provided by NHAI and ambulances provided by Ministry under NHARSS. The networks will ensure a primary crash response time of 8-10 minutes through emergency care facilities at every 50 Km along National Highways.



- राष्ट्रीय स्तर पर सड़क सुरक्षा निधि की स्थापना और सड़क नियमों के उल्लंघन पर एकत्र दंड राशि की 50 प्रतिशत राशि को इस निधि में डाला जाएगा।
- सड़क दुर्घटना की जांच।
- वाणिज्यिक वाहनों के लिए स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने से पूर्व अनिवार्य प्रशिक्षण।
- पैतृत्व संपत्ति संबंधी आंकड़ों को अपलोड करने तथा बारबार होने वाले सड़क उल्लंघनों को रिकार्ड करने, जाली ड्राइविंग लाइसेंसों का पता लगाने के लिए साफ्टवेयर में सुधार करने सहित सभी आरटीओ के कंप्यूटरीकरण के लिए “वाहन तथा सारथी” साफ्टवेयर में सुधार करना।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा नीति

भारत सरकार ने राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा नीति को स्वीकार किए जाने के प्रस्ताव को अनुमोदन प्रदान कर दिया है। राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा नीति देश में सभी स्तरों पर सड़क सुरक्षा संबंधी गतिविधियों में सुधार करने के लिए सरकार द्वारा तैयार की जाने वाली नीतिगत पहलों की रूपरेखा तैयार करेगी। इस नीति के मुख्य उद्देश्य है :

- एक सड़क सुरक्षा सूचना डाटाबेस तैयार करना।
- सुरक्षित सड़कों के निर्माण, विवेकपूर्ण परिवहन प्रणाली को लागू करके, आदि के माध्यम से सुरक्षित अवसंरचना सुनिश्चित करना।
- अभिकल्पन, विनिर्माण, प्रयोग, प्रचालन तथा अनुरक्षण के स्तर पर वाहनों में सुरक्षा विशेषताओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करना।
- ड्राइवरों की सक्षमताओं में सुधार करने के लिए ड्राइविंग लाइसेंस की प्रणाली तथा प्रशिक्षण व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना।

- Setting up of Road Safety fund at State level including mechanism of diverting 50% penalties collected towards violations in this fund.
- Road accident crash investigation
- Compulsory training before issuance of permanent driving licence for commercial vehicles
- Improvement of Vahan & Sarthi software for computerization of all the RTOs including uploading of legacy data, improvement in the software for recording repeated traffic violations, detection of fraudulent driving licenses etc.

National Road Safety Policy

Government of India has approved the proposal of adopting the National Road Safety Policy. The National Road Safety Policy outlines the policy initiatives to be framed by the Government at all levels to improve the road safety activities in the country. The policy broadly aims at:

- To establish a road safety information database
- To ensure safer road infrastructure by way of designing safer roads encourage application of Intelligent Transport system etc.
- To ensure fitment of safety features in the vehicles at the stage of designing, manufacture, usage, operation and maintenance
- To strengthen the system of driver licensing and training to improve competence of drivers.



- मूल्यवान सड़क प्रयोक्ताओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए उपाय करना।
- सड़क दुर्घटना के पीड़ितों को आपातकालीन चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना।
- सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन विकास तथा अनुसंधान व विकास (आर एंड डी) को प्रोत्साहित करना।
- देश में सड़क सुरक्षा वातावरण के संवर्धन के लिए कानूनी, संस्थागत तथा वित्तीय वातावरण को सुदृढ़ बनाना।

- To take measure to ensure safety of vulnerable road users.
- To ensure emergency medical attention for road accident victims.
- To encourage human resource development and R&D for road safety.
- To strengthen the enabling legal, institutional and financial environment for promoting road safety culture in the country.



सड़क मार्किंग

सड़क मार्किंग, रेखाओं का समूह तथा सड़क की सतह पर पेंट किया गया या स्थापित डिजाइन है, जो सड़क यातायात के संचलन को सुगम बनाता है या वाहनों की पार्किंग या पार्किंग न किए जाने वाले स्थानों को चिन्हित करने तथा अनेक अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध कराने में सहायक होता है। सड़कों के ऊपर बनाए गए ये चिन्ह वाहन चालकों तथा पैदल चलने वालों को दिशानिर्देश तथा महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

भारत में सड़कों को चिन्हित करने के लिए सफेद तथा पीले रंग का प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है। सफेद रंग का प्रयोग सामान्यतः कैरिजवे (सड़क) चिन्हों के लिए किया जाता है। प्रतिबंधों को दर्शाने के लिए पीले चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। सफेद या पीले रंग के साथ काले रंग का प्रयोग किनारों तथा वस्तु को चिन्हित करने के लिए किया जाता है।

मध्य रेखाएं : दो लेन वाली सड़कों के लिए

दो मार्गीय सड़क, जिसे किसी प्रकार की रेलिंग या संस्थापना द्वारा विभाजित नहीं किया गया है, को मध्य रेखा ही विपरीत दिशा से आने वाले यातायात के प्रवह को अलग करती है और यातायात के संचलन को सुलभ बनाती है। मध्य रेखा निम्नानुसार हो सकती है:

- I) एकल खंडित रेखा हो सकती है।
- II) एकल निरंतर स्थूल रेखा (बेरियर रेखा) हो सकती है।
- III) एक दोहरी स्थूल रेखा या स्थूल रेखा व खंडित रेखा का संयोजन हो सकता है।

एकल तथा दोहरी स्थूल रेखाओं, चाहे वह सफेद हो या पीली हो, को क्रॉस नहीं किया जाना चाहिए और न ही उसके ऊपर चलना चाहिए। दो मध्य रेखाओं वाली सड़क, जिसमें से एक रेखा स्थूल है और दूसरी खंडित, पर स्थूल रेखा का महत्व तभी है जब वह संयोजन

Road Markings

Road markings are set of lines and designs painted or installed on road surface to facilitate smooth movement of traffic or for demarcating places for parking or no parking of vehicles and many other vital information. These markings on carpeted roads provide guidance and information to drivers and pedestrians.

In India white and yellow colour are predominantly used for markings on roads.

White is generally used for carriageway (road) markings. For indicating restrictions yellow markings are used. White or yellow together with black are used for kerb and object marking.

Centre lines: for a two lane road

On a two way road, which is not divided by any railing or installations, the centre line separates the streams of traffic coming from opposite directions and facilitates their movements. The centre line can be:

- I. single broken line
- ii. single continuous solid line (barrier line)
- iii. a double solid line or a combination of solid line and broken line

Single and double solid lines, whether white or yellow, must not be crossed or even overlapped. On a road with two centre lines, of which one is solid and the other broken, the solid line has significance only if it is on the left side of the combination as viewed by the driver. In such a



के बाईं ओर है, जिसे कि चालक के द्वारा देखा जा सकता है। ऐसे मामले में, वाहन चालक को सावधान रहना चाहिए कि वह मध्य रेखा को क्रास न करे या उसके उपर से न गुजरे।

दोहरी सफेद/पीली रेखाएं

दोहरी निरंतर रेखाओं का प्रयोग वहां किया जाता है जहां दोनों दिशाओं में दृश्यता साफ न हो। यहां किसी भी दिशा से आने वाले यातायात को मध्य रेखा से क्रास करने की अनुमति नहीं होती है।

स्थूल तथा विखंडित रेखाओं का संयोजन

यदि विखंडित रेखा आपकी ओर है तो आप उसे पार कर सकते हैं या उसके उपर से निकल सकते हैं या ओवरटेक कर सकते हैं, किन्तु ऐसा तभी करना चाहिए जब ऐसा करना पूर्णत सुरक्षित हो।

यदि निरंतर रेखा आपकी ओर है तो आप उसे क्रास या ओवरलैप नहीं कर सकते हैं।

एकल पीली रेखा: आप इस रेखा को दायीं ओर मुड़ने या यू-टर्न लेने के अतिरिक्त किसी और स्थिति में क्रास नहीं कर सकते हैं।

स्टॉप लाइन

स्टॉप लाइन एकल स्थूल रेखा है जो सड़क पर जेब्रा क्रॉसिंग तथा इंटरसेक्शनों से पूर्व आरपार बनी होती है। यह रेखा दर्शाती है कि लाल सिग्नल होने पर या यातायात पुलिसकर्मी द्वारा निर्देश दिए जाने पर सभी वाहनों को इस रेखा से पीछे रूकना है। इस रेखा का उल्लंघन करने से पैदल चलने वालों के संचलन में बाधा उत्पन्न होती है और यातायात प्रबंधन भी अव्यवस्थित हो जाता है।

गिव-वे रेखा

गिव-वे रेखा सामान्यत दोहरी बिंदुओं से चिन्हित रेखा है जो जंक्शनों पर तिरछी चिन्हित होती है। सामान्यत सड़क की सतह पर बिंदुयुक्त रेखाओं से पूर्व या मार्किंग के साथ में एक सड़क चिन्ह

case, the driver must be careful not to cross or overlap the centre line.

Double white/yellow lines

Double Continuous lines are used where visibility is restricted in both directions. Neither stream of traffic is allowed to cross the lines.

Combination of solid and broken lines

If the line on your side is broken, you may cross or straddle it. Over-take - but only if it is safe to do so.

If the line on your side is continuous you must not cross overlap it.

Single Yellow Line: You cannot cross this line except while turning Right or taking a U-Turn

Stop Line

A stop line is a single solid line painted across the road before the zebra crossings and intersections. This line indicates that all vehicles should stop before it when signal is red or as directed by the traffic policeman. Violation of this line hinders the movement of pedestrians and leads to haphazard traffic management.

Give way Line

The give way line is usually a double dotted line marked diagonally at junctions. These lines are generally supplemented by a reverse triangle give way sign painted on the road surface before the dotted lines or by a road sign installed beside



अंकन द्वारा इन रेखाओं के साथ गिव-वे का उलटा तिकोन का चिन्ह बना होता है। इसका अर्थ है कि मुख्य पहुंच सड़क पर यातायात को रास्ता दें।

चौड़ी या छोर रेखाएं

ये सड़क के छोर पर निरंतर चलने वाली रेखाएं हैं और यह मुख्य कैरिज-वे की सीमा को चिन्हित करती हैं जहां तक वाहन को चलाना सुरक्षित है।

पार्किंग प्रतिबंधित रेखाएं

“नो-पार्किंग” साइन सहित एक स्थूल निरंतर पीली रेखा नो-पार्किंग क्षेत्र की सीमा को दर्शाती है।

पैदलपथ क्रॉसिंग

ये वैकल्पिक रूप से काली व सफेद पट्टियां हैं जो सड़क पर समानान्तर रूप से पेंट की जाती हैं तथा सामान्य रूप से इन्हें जेब्राक्रॉसिंग कहते हैं। पैदल चलने वालों को केवल इसी बिंदु से सड़क पार करनी चाहिए जब बत्ती ऐसा करने का संकेत दे। आपको जेब्राक्रॉसिंग पर अपना वाहन रोककर पैदल चलने वालों को रास्ता देना चाहिए। पैदलपथ क्रॉसिंग का निर्माण पैदल चलने वालों को सड़क पार करने की सुविधा व अधिकार प्रदान करने के लिए किया गया है।

सड़क चिन्हों के लिए सामान्यतः यातायात पेंटों का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त, सड़क मार्किंग के लिए सड़क सट्टडस, कैट आई तथा थर्मोप्लास्टिक पट्टियों जैसी अन्य सामग्री का भी प्रयोग किया जाता है। ये चिन्ह सड़क सुरक्षा को संवर्धित करते हैं और यातायात के सुगम प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं। कई बार, सड़क संकेतों का प्रयोग सड़क चिन्हों तथा अन्य उपकरणों के संदेश के लिए भी किया जाता है।

the marking. Give way to traffic on the main approaching road.

Border or edge lines

These are continuous lines at the edge of the road and mark the limits of the main carriageway upto which a driver can safely move.

Parking prohibited lines

A solid continuous yellow line painted on the kerb along with a "No-parking" sign indicates the extent of no-parking area.

Pedestrian Crossings

These are alternate black and white stripes painted parallel to the road generally known as zebra crossing. Pedestrians must cross the road only at the point where these lines are provided and when the signal says so. You must stop and give way to pedestrians at these crossings. Pedestrian crossings are marked to facilitate and give the right of way to pedestrians.

Traffic paints are commonly used for road markings. Other materials such as, road studs, cat's eyes and thermoplastic strips are also used for application in road markings. These markings promote road safety and ensure smooth flow of traffic. Sometimes, road markings are used to supplement the message of road signs and other devices.



सड़क पर झगड़ा (रोड रेज)

परिभाषा: रोड रेज को सड़क पर वाहन चलाते समय वाहन के चालक या अन्य यात्रियों के उत्तेजक और कई बार हिंसक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके कारण सड़क प्रयोगकर्ताओं को वाहनों की भिड़ंत/दुर्घटना, झगड़ा, चोटें लगना तथा मानसिक तनाव आदि स्थितियों से गुजरना पड़ता है। रोड रेज के अधिकतर मामलों में शराब की भूमिका होती है। यह एक समाज विशेष की सांस्कृतिक परम्पराओं पर भी निर्भर करता है। आज लोगों के बीच आपसी बहस रोड रेज का प्रमुख कारण बन गया है।

सड़क पर झगड़े (रोड रेज) के अनेक कारणों में से कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं:

- ट्रैफिक जाम:** ट्रैफिक जाम होने के कारण एक वाहन के चालक की उत्तेजना बढ़ने लगती है। ऐसे में उकसाए जाने की छोटी स्थिति भी झगड़े का कारण बन सकती है।
- भीड़-भाड़:** भीड़-भाड़, खराब पार्किंग व्यवस्था आदि के कारण भी कई बार वाहन चालकों को जल्दी क्रोध आ जाता है जिसके कारण रोड रेज की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- खराब मौसम:** खराब मौसम न केवल चालन परिस्थितियों को खराब बनाता है बल्कि मनोस्थिति में भी तीव्र परिवर्तन लाता है, जिसके कारण व्यक्ति के क्रोध के स्तर में भी वृद्धि हो जाती है।
- खराब सड़कें:** खराब सड़कों के कारण होने वाली असुविधा व विलंब कई बार चालक को उत्तेजक कर देती है।
- मानसिक स्थिति:** पहले से परेशान सड़क प्रयोक्ता की मनोस्थिति को और खराब करने में क्रोध, घरेलू झगड़े, उदासी आदि भी योगदान करते हैं।
- शराब:** रोड रेज के मामलों को जन्म देने का सबसे

Road Rage

Definition : Road rage is an aggressive and sometimes violent behavior of driver or other occupants of vehicle while on road. This may cause crashes/accidents, fight, inflicting injuries and trauma to other road users. Alcohol has been many a time associated with road rage. It also depends on cultural norms of a particular society. Road Rage has now become a common cause of altercation on roads.

Followings could be some reasons of road rage.

- Traffic jams:** Traffic jams increase the anxiety of an occupant of a vehicle. A slight provocation can lead to altercation.
- Congestion:** Congestion, bad parking etc sometimes blows out persons with short temper which can result in Road rage.
- Bad weather:** Bad weather not only deteriorates driving conditions it also contributes to mood swings which could further aggravate adrenal level of a person.
- Bad roads:** The discomfort and delay caused by bad roads many a times makes a driver irritable.
- Mental state:** Anger, domestic fights, depression etc contribute to infuriating a person on road.
- Alcohol:** Alcohol is one of the most common factors which fuels Road rage. Alcohol falsely raises



हानिकारक कारण शराब है। शराब धीरे-धीरे सामान्य व्यक्ति में गलत कार्य करने के लिए आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

प्रतिस्पर्धा की भावना, गति से प्रेम, शत्रुता आदि कुछ ऐसे अन्य कारक हैं जिनके कारण रोड रेज की स्थिति उत्पन्न होती है।

रोड रेज के सामान्य संकेत इस प्रकार हैं:

1. उत्तेजक ड्राइविंग अर्थात् वाहन की गति में अचानक तीव्रता लाना और अचानक ब्रेक लगाना।
2. सड़क पर टेडी मेडी ड्राइविंग करना।
3. तीव्र गति पर बार-बार लेन बदलना।
4. अपनी लेन से अचानक दूसरे वाहन के आगे अपना वाहन लाना।
5. जानबुझकर अन्य वाहनों के लिए अवरोध उत्पन्न करना।
6. जानबुझकर दूसरे वाहनों को टक्कर मारना।
7. चलते वाहनों से हथियारों को प्रदर्शित करना।
8. लाल बत्ती पर भी वाहन चलाना।
9. गाड़ी को दूसरी गाड़ी के पीछे सटाकर चलाना।
10. सड़क पर अपने वाहनों के साथ करतब करना और इससे अन्य सड़क प्रयोगकर्ताओं के लिए खतरा उत्पन्न करना।
11. निरंतर हॉर्न बजाना व लाइट फ्लैश करना।
12. सड़क प्रयोगकर्ताओं को भलाबुरा कहना, धमकाना, अप्रिय मुद्राएं व आव-भाव प्रदर्शित करना।
13. चलने वाहनों से अन्य सड़क प्रयोगकर्ताओं पर वस्तुएं फेंकना।
14. वाहन से बाहर निकल कर अन्य सड़क प्रयोगकर्ताओं के साथ झगड़ा करना।

समझदार चालकों तथा अन्य यात्रियों को इस प्रकार के संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए और लड़ाई झगड़े की स्थिति से बचना चाहिए।

the confidence of a normal person by leaps and bounds for unruly behaviour.

Other factors which could result in road rage are sense of competition, Love for speed, animosity etc.

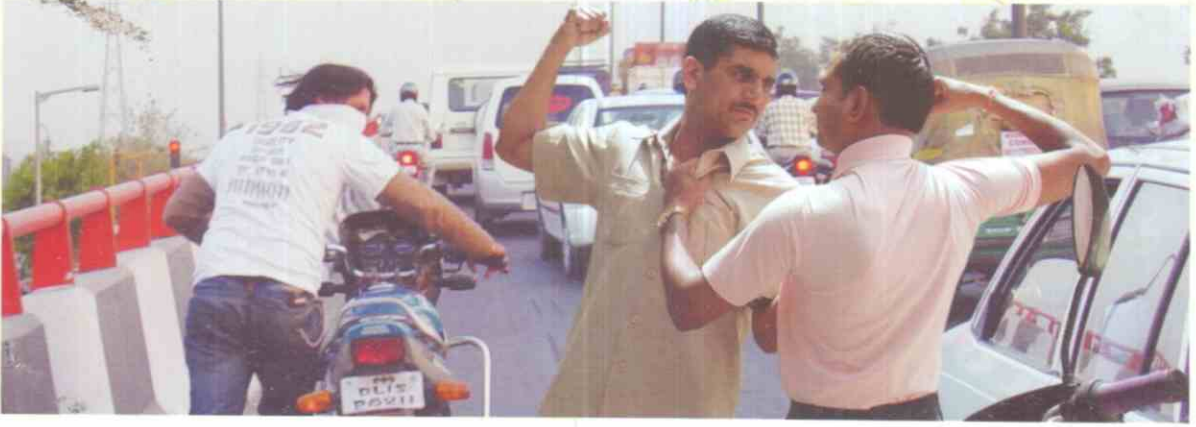
Common manifestation of Road Rage

1. Aggressive driving i.e. sudden acceleration and braking.
2. Zig-zag driving.
3. Frequent lane changing at high speed.
4. Cutting others off in a lane.
5. Deliberately obstructing other vehicles from merging.
6. Deliberately hitting another vehicles.
7. Flaunting weapons.
8. Red light jumping.
9. Close tailgating.
10. Acrobatics on road, threatening convoys.
11. Continuous Honking and flashing lights.
12. Verbal abuse, threatening, rude gestures.
13. Throwing objects from moving vehicles on other road users.
14. Getting out of the vehicle and picking up confrontation with other road users.

Wise drivers and occupants should notice these signs and avoid direct confrontation.

Avoiding Road Rage:

A driver under the influence of road rage can be easily identified with these manifestations. The best way not to being the victim of these aggressive drivers is just avoid them.



सड़क पर झगड़े (रोड रेज) से बचना

सड़क पर झगड़े की स्थिति से प्रभावित व्यक्ति को निम्नलिखित संकेतों द्वारा पहचाना जा सकता है। इन उत्तेजक चालकों के क्रोध या झगड़े से बचने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि इनसे बच कर निकल जाएं और इनसे बहस आदि न करें।

निम्नलिखित कृत्यों द्वारा अन्य चालकों को परेशान न करें :

- अचानक सामने गाड़ी ले आना।
- अन्य वाहनों के बहुत समीप से गुजरते हुए यातायात में मिलना। यदि ऐसा हो जाता है तो शिष्टाचारपूर्वक माफी मांग लें।
- दूसरे वाहनों के पीछे बहुत नजदीकी से वाहन चलाना।
- अन्य चालकों को क्रोध की मुद्रा में नहीं देखना चाहिए।

निम्नलिखित स्थितियों से बचें:

यदि एक उत्तेजक चालक द्वारा आप पर क्रोध किया जाए।

- सीधे सड़क की ओर देखें।
- झगड़े की स्थिति में आंखों से आंखों का सीधा संपर्क न रखें या झगड़ा होने की स्थिति में पुलिस को कॉल करें या मदद मांगें।

अपना धैर्य न खोए:

- उत्तेजक टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया न करें।
- शिष्ट तथा शांत बने रहें।

अपने व्यवहार को सही करें:

- क्रोध से बचें।
- अपनी गलती को स्वीकार करें, गलती पर क्षमा मांगें।
- ड्राइविंग को प्रतिस्पर्धा न बनाएं।
- शराब पीकर वाहन न चलाएं।

Don't offend fellow drivers

- By cutting off.
- By merging into traffic very closely to other vehicle. If done, apologize with sober gesture.
- Avoid close tailgating.
- Don't stare in anger at other drivers.

Don't engage:

In case you are being harassed by a aggressive driver.

- Just steer off clearly.
- Avoid eye contact and in case of confrontation call police or get help.

Don't loose your calm:

- Do not respond to inciting remarks.
- Try to be courteous and polite.

Correct your attitude:

- Avoid Anger.
- Accept your mistakes, Say Sorry, if in the wrong.
- Don't make driving a competition.
- Don't drive after consuming alcohol or drugs.



देर रात तक चलने वाली पार्टियां तथा ड्राइविंग

पार्टियां करना आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है किन्तु शराब व अन्य नशे की दवाओं के कारण ये मनोरंजक पार्टियां मातम में बदल जाती हैं। पार्टियां जीवन का उत्साह प्रदर्शित करती है जो हमें खुशियां देती हैं। हर रोज हम समाचार पत्रों में दुर्घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं जिनमें युवा किशोर अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने परिवार के संबंध में ऐसी खबर नहीं सुनना चाहता है और ना ही हम यह चाहते हैं कि बिना किसी बीमारी के किसी भी व्यक्ति की मृत्यु इस प्रकार सड़क पर हो। समाज को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए मनोरंजन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:

- देर रात तक चलने वाली पार्टियों से बचें।
- पार्टी में शराब आदि का सेवन न करें।
- जब कभी आपको लगे कि आपको आने में देर हो सकती है तो अपने ड्राइवर को साथ रखें।
- रात की पार्टियों में जाते समय आपका एक ऐसा मित्र अवश्य ही साथ में होना चाहिए जो मदिरापान न करता हो और उस ड्राइविंग भी आती हो।
- यदि कोई आपसे कहता है कि आप गाड़ी चलाने की स्थिति में नहीं है तो उसकी बात मान लें और ड्राइविंग न करें।
- अधिकतर दुर्घटनाएं रात्रि 2 बजे से सुबह 6 बजे के बीच में होती हैं।
- पार्टी के बाद ड्राइविंग रोमांचक हो सकती है किन्तु अपने जीवन को खतरे में मत डालें।
- सदैव अपने परिवार के संपर्क में रहें।
- इन सभी बिंदुओं के प्रति सावधान रहें तथा एक विवकपूर्ण व सुरक्षित नागरिक बनें।

Late Night Parties and Driving

Partying is a way of life today but alcohol and drug abuse can turn it into mourning. Partying is cherishment of life which gives you happiness. Any impediment to this happiness is uncalled for. Every day we read news about accidents and young people losing their lives on road. Nobody wants such news to emanate from their family, nor do we want people loose life on road. To make society safe, following points should be kept in mind while celebrating.

- Avoid late night parties.
- Avoid alcohol in party.
- When you feel you will get late, consider taking a driver with you.
- Always have a friend who is teetotaler and knows driving when partying late during nights.
- If somebody tells you that you are not fine to drive, believe him and do not drive.
- Maximum accidents take place during wee hours i.e. 2 am to 6 am.
- Driving after party could be fun but don't put your life on stake.
- Always keep your family informed.
- Take heed to these points and be a wise and safe citizen.



लेन ड्राइविंग

“लेन ड्राइविंग ही सुरक्षित ड्राइविंग है” जो हमेशा सड़क प्रयोगकर्ताओं के लिए सही साबित होती है। भारत हमें यह कहावत पोस्टरों, पर्चों और होर्डिंगों में ही नजर आती है। हम बहुत कम देखते हैं कि वाहनों के ड्राइवर इस कहावत का किसी भी रूप में अनुसरण करते हैं।

- लेन ड्राइविंग तथा अपनी लेन में बने रहना, ड्राइविंग की सबसे आसान विधि है। लेन ड्राइविंग की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को तभी सफल बनाया जा सकता है जब अधिकतर ड्राइवर लेन ड्राइविंग की विधि का अनुसरण करें। कुछ लोग लेन ड्राइविंग का अनुसरण करें और अधिकतर अव्यवस्थित रूप से ड्राइविंग करें, ऐसे में इस समस्या का समाधान संभव नहीं है।
- यदि लेन ड्राइविंग का सही ढंग से अनुसरण किया जाए तो ओवरटेकिंग भी सुगम हो जाएगी। पर्वतीय सड़कों पर लेन ड्राइविंग अत्यंत आवश्यक है। अधिकतर सड़कों पर मध्य रेखा चिह्नित होती है। तथापि, यदि जब किसी सड़क पर लेनों के लिए उचित मार्किंग न भी हो तो भी आपको पता होना चाहिए कि आपको किस लेन में चलना है।
- ड्राइवर को हमेशा रक्षात्मक छोर पर होना चाहिए। कभी दूसरे ड्राइवर पर भरोसा न करें। आपको दुर्घटना से बचने के लिए सबसे सुरक्षित माध्यम को ध्यान में रखना चाहिए और अपनी लेन में ही वाहन को चलाना सुरक्षित ड्राइविंग का सर्वोत्तम तरीका है।

Lane Driving

LANE driving is sane driving; this adage has always proved good to the user. In India the saying remains on posters, pamphlets and hoardings only. We seldom see drivers following it in practice.

- Lane driving or sticking to your lane is one of the easiest ways to drive safely. The method of lane driving can only be made successful when most of the drivers follow it, few following lanes and most driving haphazardly would not solve the problem.
- If lanes are followed, overtaking also become smooth. Lane driving is an absolute necessity on a hill road. Most roads are demarcated by a centre line. However, sometimes when the road is not marked by proper lanes, you should still be able to tell which side of the road you should be on.
- A driver always has to be on the defensive and to make allowance for mistake by another driver. You have to take the safest way to avoid accident and the best way is to stick to your lane.



सड़क सुरक्षा के दस तथ्य

- ★ वर्ष 2030 तक सड़क यातायात के कारण लगने वाली चोटें वैश्विक रूप से मृत्यु का पांचवां सबसे बड़ा कारण बन जाएंगी।
- ★ सड़क पर होने वाली अधिकतर मौतें सिर पर चोटें लगने के कारण होती हैं। एक अच्छी गुणवत्ता वाला हेलमेट सिर की गंभीर चोटों की संभावनाओं को 70% तक कम कर देता है।
- ★ 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से होने वाली टक्कर पांचवीं मंजिल से गिरने पर होने वाले प्रभाव के बराबर होती है।
- ★ गाड़ी चलाते समय सीट बेल्ट पहनने से चालक की दुर्घटना के दौरान मृत्यु की संभावना 60% तक कम हो जाती है।
- ★ चालक को वाहन चलाते समय सड़क पर पूरा ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है और वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग चालक की इंद्रियों को व्यस्त कर देता है।
- ★ सड़क प्रयोक्ताओं के साथ दुर्घटनाओं की संभावनाएं रात्रि के समय बढ़ जाती हैं।
- ★ औसत यातायात गति में प्रत्येक 1% की कमी के परिणामस्वरूप दुर्घटनाओं की संख्या में 2% की कमी होती है।
- ★ सामान्यतः अच्छे टायरों का मूल्य वाहन के मूल्य का केवल 2 से 4% तक होता है। टायरों के मूल्य में समझौता करने से वाहन को धन की दृष्टि से तथा अन्यथा भी काफी क्षति पहुंच सकती है।
- ★ भारत में चालक की गलती के कारण सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु की कुल संख्या में से 10% से अधिक दुर्घटनाएं शराब/नशीले पदार्थों का सेवन करने के कारण होती हैं।
- ★ एक जागरूक तथा सचेत चालक अनहोनी की संभावनाओं को कम कर सकता है।

Ten Road Safety Facts

- ★ Road Traffic injuries are expected to become the fifth leading cause of death globally by 2030.
- ★ Most deaths on road are due to head injuries. A good quality helmet reduces chances of severe head injury by over 70%.
- ★ Collision at 50 kmph is like falling from the fifth floor.
- ★ Use of Seat belt while driving reduces the risk of death of an occupant during an accident by over 60%.
- ★ Driving requires full attention, using mobile phone while driving diverts our senses.
- ★ Vulnerability of road users to accident increases at night.
- ★ For every 1% reduction in average traffic speed, there is a 2% reduction in the number of accidents.
- ★ Normally cost of good tyres is only 2-4% of the price of a vehicle. Compromise on the cost of tyres can result in huge damages both monetary and otherwise.
- ★ Out of the total number of death in road accident in India due to driver's fault, more than 10% was due to intake of alcohol/drugs.
- ★ An aware and conscious driver reduces the chances of mishaps.